Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.com

अहिंसा (दया)

जीव जीवें ते दया नहीं,
मरे ते हो हिंसा मत जांण।
मारण वाला नें हिंसा कही,
नहीं मारे हो ते तो दया गुण खांण।।

जीव जीता है, वह दया नहीं है। मरता है, वह हिंसा नहीं है। मारने वाला हिंसक कहलाता है। नहीं मारना शुद्ध दया है।

– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 26 • अंक 17 • 27 जनवरी- 02 फरवरी, 2025 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 25-01-2025 • पेज 16 • ₹ 10 रुपये

शरण स्वाम शासण सुजस, धर्म दुधर शिव धाम।
वरण अमर वधु वसुधरा, तरण भवोदधि ताम।।

विविध सुविध मर्याद सुध, स्थापन कर स्थिर भाव।
भिक्खू प्रगट्या भरत में, सांप्रत तरणी नाव।।

161वां मर्यादा महोत्सव

भुज, 2, 3, 4, फरवरी 2025

161वें मर्यादा महोत्सव पर द्वितीय दशक के प्रथम भिक्षु को सादर अभिवंदना

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
27 जनवरी- 02 फरवरी, 2025

धर्म स्थान के साथ कर्म स्थान में भी हो धर्म : आचार्यश्री महाश्रमण

ग्यारहवें अधिशास्ता का 11 वर्षों बाद हुआ कच्छ की धरा पर मंगल प्रवेश

जूना कटारिया।
19 जनवरी, 2025

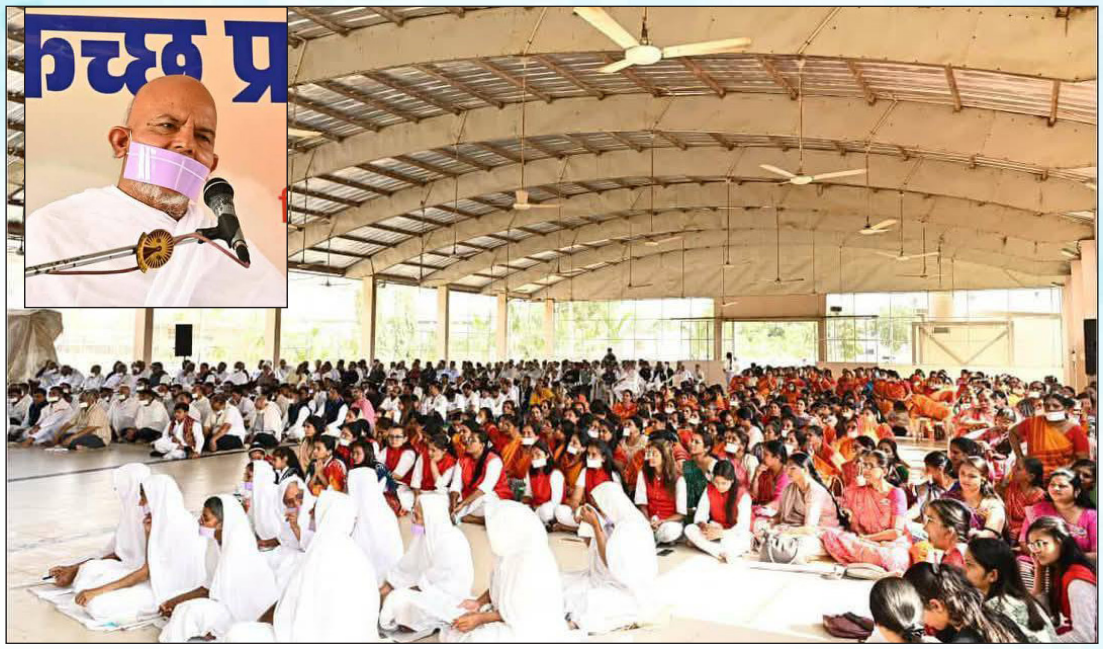

धर्म धुरन्धर आचार्यश्री महाश्रमणजी सूरजवाड़ी स्थित आदिनाथ जैन उपाश्रय से लगभग 11 किलोमीटर विहार कर जूना कटारिया स्थित जैन तीर्थ में पधारे। तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें पट्टधर का ग्यारह वर्षों बाद पुनः कच्छ पदार्पण के अवसर पर कटारिया जैन तीर्थ में कच्छ प्रवेश स्वागत समारोह का भव्य आयोजन किया गया।

मंगल देशना प्रदान कराते हुए आचार्यवर ने फरमाया कि शास्त्र में कहा गया है धर्म उत्कृष्ट मंगल है। आदमी अपने जीवन में मंगल की कामना करता है। स्वयं का भी वह मंगल चाहता है और दूसरों का भी मंगल चाहता है। मंगल के लिए प्रयास भी किया जाता है। प्रश्न होता है कि मंगल के लिए क्या करना चाहिए? संसार में मंगल के लिए अच्छा मुहुर्त देखा जाता है। कुछ पदार्थ भी मंगल के लिए दिए जाते हैं। परन्तु सबसे बड़ा मंगल धर्म है। जिसके साथ धर्म है, उसके पास मानो परम मंगल है। प्रश्न होता है कि कौनसा धर्म मंगल है? शास्त्रकार ने बढ़िया बात बता दी कि अहिंसा, संयम और तप धर्म है और इनकी जो साधना करेगा उसके पास मंगल है। आध्यात्मिक धर्म सर्वरूपेण इन तीन में समाविष्ट हो गया है।

आचार्यश्री ने बतलाया कि अहिंसा धर्म व्यापक धर्म है। संयम सबके लिए कल्याणकारी है। तपस्या अच्छी भावना से कोई करे तो उसका हित हो सकता है। अहिंसा भीतरी सुख देने वाली है, हिंसा दुःख का कारण है। अणुव्रत का कहना है कि इन्सान अच्छा इन्सान बने। चाहे वो किसी भी धर्म-जाति वाला हो। अहिंसा, संयम, नैतिकता को मानने वाला अणुव्रतों को स्वीकार कर सकता है।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने अहिंसा यात्रा के अन्तर्गत अहिंसक चेतना का जागरण और नैतिक मूल्यों के विकास की बातें सामने लाई थी। हम सबको आत्म तुल्य समझें और अहिंसा के पथ पर चलने का प्रयास करें।

आचार्यश्री ने आगे बताया कि अहिंसा के साथ संयम जुड़ा हुआ है। मन, वचन और काया पर संयम रखें। आदमी झूठ, कटु और फालतु न बोले, सोचकर बोले। मन में किसी के प्रति बुरा विचार न आए। अच्छा सोचो, अच्छा बोलो, अच्छा देखो, अच्छा सुनो और अच्छा करो, इच्छा भी करो तो अच्छी इच्छा करो।

धर्म की चर्चा करते हुए पूज्य प्रवर ने आगे फरमाया कि संयम के साथ तप भी समाविष्ट हो जाते हैं। तपस्या के अनेक प्रकार हैं, उससे निर्जरा होती है। अहिंसा, संयम और तप यह व्यापक धर्म है, मानो सम्प्रदायातीत धर्म है। उपासना करना भी धर्म है पर आचरणों में भी धर्म होना चाहिए। धर्म स्थान में तो धर्म होता ही है पर कर्म स्थान में भी धर्म हो। धर्म तो आदमी के साथ हर जगह रहना चाहिए।

जीवन में अहिंसा, नैतिकता है तो आत्मा का कल्याण हो सकता है। जिसका मन हमेशा धर्म में रमा रहता है, देवता भी उसको नमस्कार करते हैं। अहिंसा हमारी चेतना में, मन, वाणी और व्यवहार में रहे यह काम्य है। कच्छ में हमारा प्रवेश हो गया है। कच्छ में भी हमारे प्रवास में धार्मिक लाभ उठाने का प्रयास हो। खूब आध्यात्मिकता धार्मिकता रहे।

पूज्यवर के कच्छ प्रवेश स्वागत समारोह के अवसर पर भुज मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति अध्यक्ष कीर्ति भाई संघवी, कच्छ पंचायत सभा की ओर से जनकसिंह जाड़ेजा, कच्छ जिला पंचायत प्रमुख जनक सिंह जाड़ेजा, पूर्व विधायक पंकज भाई मेहता, गुजरात भाजपा सेल संयोजक हितेश भाई खांडोल, कटारिया जैन तीर्थ के मुख्य ट्रस्टी कमल भाई मेहता, स्वागताध्यक्ष नरेंद्र भाई मेहता, सभा अध्यक्ष बाड़ी भाई, तेयुप अध्यक्ष महेश भाई, महिला मंडल अध्यक्षा मंजू संघवी, महिला मंडल से अमिता मेहता, अणुव्रत समिति से महेश प्रभुभाई मेहता, तेरापंथ सभा अध्यक्ष अशोक संघवी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। आराध्य का अभिनंदन करते हुए कच्छ क्षेत्र की साध्वी हेमलता जी ने वक्तव्य दिया एवं अन्य साध्वियों ने सामूहिक गीत का संगान किया।

इस अवसर पर ज्ञानशाला गांधीधाम, भुज ज्ञानशाला, कन्या मंडल की सदस्याओं ने पृथक–पृथक प्रस्तुति दी। भुज की बेटियों ने भी अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

श्रमणधर्म को प्राप्त करने वाला हो जाता है धन्य-धन्य : आचार्यश्री महाश्रमण

शिकारपुर।
18 जनवरी, 2025

वर्तमान के वर्धमान, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अपनी धवल सेना के साथ मोरबी जिले की सीमा को पार कर कच्छ जिले में मंगल प्रवेश किया। लगभग 14 किलोमीटर का विहार कर पूज्य प्रवर कच्छ जिले के शिकारपुर गांव के आदिनाथ जैन देरासर परिसर में पधारे। आचार्यश्री के कच्छ पदार्पण के संदर्भ में कच्छ और भुज के श्रद्धालु काफी संख्या में उपस्थित थे।

अमृत देशना प्रदान कराते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि ज्ञानी और बहुश्रुत व्यक्तियों से हमें ज्ञान प्राप्त हो सकता है। शास्त्र में कहा गया है कि बहुश्रुत की पर्युपासना करें, प्रश्न करें तथा अर्थ विनिश्चय करें। पूछने से ज्ञान स्पष्ट हो सकता है। स्वाध्याय के पांच प्रकारों में दूसरा प्रकार है- पृच्छना। आदमी कोई प्रश्न पूछता है और उसका अच्छा समाधान मिलता है तो उसका ज्ञान पुष्ट हो जाता है।

प्रश्न हो सकता है कि बहुश्रुत की पर्युपासना क्यों करें? उत्तर दिया गया कि श्रमण धर्म को पाने के लिए बहुश्रुत की उपासना करें। इससे इहलोक और परलोक का हित होता है, सुगति की प्राप्ति होती है।

साधुत्व की प्राप्ति एक दुर्लभ और महत्वपूर्ण उपलब्धि है क्योंकि केवल मानव जीवन में हम आध्यात्मिक विकास और साधुत्व प्राप्त कर सकते हैं। श्रमणधर्म को प्राप्त करने वाला धन्य-धन्य हो जाता है क्योंकि वह किसी-किसी मनुष्य को ही प्राप्त होता है।

पूज्यप्रवर ने आगे फ़रमाया कि साधुओं का सहयोग मिले तो वैराग्य जागृत हो सकता है। जीवन की दिशा और दशा बदल सकती है। ज्ञानी गुरू से ज्ञान मिल सकता है और अगर आत्मा रूपी लोहे के संयम रूपी पारस लग जाए तो आत्मा सोने जैसी निर्मल बन सकती है। आचार्य श्री ने आगे बताया कि श्रमण धर्म बड़ा हितकर है। सम्यक्त्व मिल जाए, श्रमण धर्म मिल जाए, यह अनन्त काल की बड़ी उपलब्धि हो सकती है। यह श्रमण धर्म हमारे रोम-रोम में रम जाए। अध्यात्म से जुड़े रहें तो कल्याण की दिशा में गति हो सकती है।

आचार्य श्री ने जैन धर्म के सिद्धांतों कि चर्चा करते हुए बताया कि इस लोक में एक समय में कम से कम 20 तीर्थंकर और उत्कृष्ट 170 तीर्थंकर रहते ही हैं और यह दुनिया के लिए बड़ी बात होती है। वर्तमान में हमारी भूमि पर तीर्थंकर तो नहीं है पर जो मार्गदर्शक मिलते हैं, उनसे प्रेरणा पा धर्म के पथ पर, अध्यात्म के मार्ग पर गतिमान रहने का प्रयास करें।

कच्छ मित्र पत्र अखबार के कई सदस्य पूज्यवर की सन्निधि में पहुंचे। अखबार के मैनेजिंग डाइरेक्टर मुकेश जैन एवं दीपक मांकड़ ने पूज्यवर के स्वागत में अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 जनवरी- 02 फरवरी, 2025

ईमानदार व्यक्ति का वरण करती है समृद्धि और सुगति : आचार्यश्री महाश्रमण

हरिपर।
17 जनवरी, 2025

अर्जुननगर से लगभग ग्यारह किलोमीटर का विहार कर युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ हरिपर गांव में स्थित श्रीमती चंचलबेन विहारधाम परिसर में पधारे। तेरापंथ सरताज ने उपस्थित जनसमूह को आध्यात्मिक प्रेरणा प्रदान करते हुए जैन वांग्मय में वर्णित अठारह पापों में से तीसरे पाप 'अदत्तादान' के विषय में समझाने का प्रयास किया। आचार्यश्री ने फरमाया कि अदत्तादान का अर्थ है, वह चीज लेना जो उसके मालिक ने नहीं दी है। यह चोरी के समान है और इसे पाप माना गया है। चोरी न करना एक उत्तम संकल्प है। ईमानदार व्यक्ति के लिए न केवल मोक्ष प्राप्ति की संभावना बढ़ती है, बल्कि समृद्धि, यश और कीर्ति भी उसकी ओर आकर्षित होती हैं। कहा गया है कि जिसने संकल्प कर लिया कि मैं चोरी नहीं करूंगा, ऐसे ईमानदार व्यक्ति का

समृद्धि भी वरण करती है, सुगति उसको चाहती है, दुर्गति उसे देख भी नहीं पाती। आचार्यश्री ने ईमानदारी के तीन प्रमुख आयाम बताए :

1. चोरी नहीं करना।
2. झूठ नहीं बोलना।
3. छल-कपट नहीं करना।

आचार्य प्रवर ने कहा कि चोरी करना न केवल व्यक्ति को नैतिक रूप से गिराता है, बल्कि उसे भविष्य में अपने कर्मों का फल चुकाने के लिए बाध्य करता है। साधु के जीवन में अदत्तादान विरमण महाव्रत का पालन अनिवार्य है। साधु तो बिना अनुमति के छोटी से छोटी वस्तु भी नहीं लेते। गृहस्थों के लिए अणुव्रत के रूप में चोरी न करना आवश्यक है। दूसरों की चीज मांग लेना अलग बात है, लेकिन चुराना नहीं चाहिए। धन केवल भौतिक संपदा नहीं, बल्कि उदारता और परोपकार का साधन होना चाहिए। कहा गया है कि जो व्यक्ति धन का सदुपयोग नहीं करता, वह दरिद्र ही है।

आचार्यश्री ने बताया कि चोरी के पीछे प्रमुख कारण गरीबी, अभाव और लोभ हो सकते हैं। लेकिन इनसे बचने के लिए संस्कारों का निर्माण आवश्यक है। बच्चों को बचपन से ही नैतिकता का पाठ पढ़ाया जाना चाहिए। स्कूलों में अन्य विषयों के साथ अच्छे संस्कार और नैतिकता का शिक्षण भी अनिवार्य होना चाहिए।

आचार्यश्री ने स्कूल के बच्चों से संवाद किया और उन्हें प्रेरणाएं प्रदान कीं। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

सम्यक दर्शन कार्यशाला पारितोषिक वितरण

जयपुर। अभातेयुप एवं समण संस्कृति संकाय के संयुक्त तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् जयपुर द्वारा मुनि तत्त्वरूचि जी 'तरूण' के सान्निध्य में भिक्षु साधना केन्द्र में सम्यक दर्शन कार्यशाला के पारितोषिक का वितरण किया गया।

मुनिश्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि जैन दर्शन के प्रति श्रावक-श्राविकाओं का ज्ञान भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

कार्यक्रम में उपस्थित सभी संभागियों को तेयुप जयपुर की ओर से विगत 4 वर्षों के प्रशस्ति पत्र व पारितोषिक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में युवक रत्न राजेन्द्र सेठिया, तेयुप जयपुर के पूर्व अध्यक्ष राजेन्द्र बांठिया, मंत्री अभिषेक भंसाली, कार्यसमिति सदस्य सहित अनेकों श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम के अनुदानदाता दौलतमल सिंघवी, जतन सिद्धराज भंड़ारी, प्रेम मेहता के प्रति परिषद् परिवार की ओर से आभार ज्ञापित किया गया।

हर प्रवृत्ति में हो संयम की सुवास : आचार्यश्री महाश्रमण

मोरबी। ।
14 जनवरी, 2025

मकर सक्रांति का दिन, सूर्य का उत्तरायण की ओर गमन प्रारंभ हुआ। जिन शासन के तेजस्वी महासूर्य टाइल्स व दीवार घड़ियों के मुख्य उत्पादन क्षेत्र - मोरबी में पधारे। मोरबी में पूज्य डालगणी ने मुनि अवस्था में चतुर्मास किए थे।

मोरबी के नोबेल किड्स स्कूल में महामनीषी ने अमृतदेशना देते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में सुख और दुःख का एक युगल है। जीवन में कभी सुख मिल जाता है, कभी दुःख भी मिल सकता है। कभी संपदा तो कभी आपदा भी आ सकती है। मनुष्य दुःख मुक्त रहना चाहता है। साधु भी सर्व दुःख मुक्ति - मोक्ष की प्राप्ति हो, यह चाहता है। संपदा की खुशी भी दुःख का कारण बन सकती है।

प्रश्न है कि दुःख से छुटकारा कैसे मिले? किसी भी प्रकार का दुःख न हो। सर्वथा दुःख मुक्ति की अवस्था कैसे मिले? जीवन में मानसिक पीड़ा न हो। शास्त्र में इसका उपाय बताया गया है- पुरुष! अपनी आत्मा का अभिनिग्रह कर। तुम अपने आप का अभिनिग्रह-

संयम करो। स्वयं पर स्वयं का नियंत्रण कर लो तो दुःख से मुक्त रहोगे। जिसके पास क्षमा रूपी खड़ग है, उसका दुर्जन क्या करेगा? घास-फूस के ढेर में अग्नि पड़ जाए तो ज्वाला प्रज्ज्वलित हो सकती है, अतृण पर अग्नि कैसे प्रज्ज्वलित होगी? असंयम से दुःख हो सकता है। प्रयास हो कि हर प्रवृत्ति में संयम रहे। मन, वाणी और काया का भी संयम रहे। क्रोध-आक्रोश न करें। खुद भला तो जग भला। मनुष्य को स्वानुशासन रखने का प्रयास करना चाहिए। इंद्रियों का असंयम न करें। संयम सुख का कारण है। साधु तो हर प्रवृत्ति में संयम के प्रति जागरूक रहे। संयम रखेंगे तो पाप कर्म से बच सकते हैं। अणुव्रत का प्राण तत्व है- संयमः ! खलु जीवनम्। दूसरों पर हम संयम-अनुशासन नहीं थोप सकते। अपना स्वयं का संयम करो तो बचाव हो सकता है। खुद को बदलें, दूसरों को सब जगह नहीं बदल सकते। किसी के साथ धोखाधड़ी या झूठ न बोलें।

आचार्यश्री ने आगे कहा कि आज हमारा मोरबी में आना हुआ है। गुरुदेव तुलसी कच्छ से लौटते समय मोरबी पधारे थे और मेरा कच्छ की ओर जाते समय में आना हुआ है। यहां की जनता में खूब धार्मिकता-आध्यात्मिकता आदि के अच्छे संस्कार रहें, मंगलकामना।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि मकर सक्रांति को शुभ माना गया है। सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण की ओर प्रस्थान कर रहा है। हमें आत्मा का आरोहण करना है। अच्छा मार्गदर्शक मिल जाता है, गंतव्य तय होता है तो हम गंतव्य तक पहुंच सकते हैं। हमें सही मार्ग को स्वीकार करना है ताकि समय पर हम गंतव्य तक पहुंच जाएँ। सही मार्ग से दुःखों से मुक्त हो सकते हैं।

पूज्यवर के स्वागत में मोरबी की ओर से चेतन भंसाली, बालिका चारवी भंसाली ने अपनी भावना व्यक्त की। नोबेल स्कूल के कनकभाई सेठ ने भी आचार्यश्री का हार्दिक स्वागत किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
27 जनवरी- 02 फरवरी, 2025

नववर्ष पर वृहद् मंगलपाठ का हुआ समायोजन

जयपुर।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने जयपुर के टेगौर नगर में नववर्ष के पावन अवसर पर विशिष्ट मंत्रों एवं प्रभावशाली स्तोत्रों के साथ वृहद् मंगलपाठ के द्वारा विशाल परिषद् में नव ऊर्जा का संचार किया। साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने उद्बोधन में कहा- नवीनता एवं पुरातन का संगम स्थल है - जीवन।

2024 पुराना हो गया एवं पच्चीस नव मधुमास लेकर आया है। आज चिंतन करें कि पिछले वर्ष हमने जो संकल्प सजाए थे, जो सुनहरे सपने देखे थे, आज वे संकल्प शिखर तक पहुंचें हैं या बीच में ही रह गए। सपना यथार्थ की धरती पर फलबान बना है या सपना ही रह गया है।

चिंतन के वातायन को खोले एवं अधूरे कामों को पूरा करने में फिर से जुट जाएं। साध्वीश्री ने कहा कि मानव जीवन कुदरत से मिला बेशकीमती उपहार है। 2025 में जीवन को सार्थक दिशा देने का प्रयत्न करें। जीवन की महफिल में अध्यात्म के दीप जलाएं। जीवन को शानदार, जानदार एवं चमकदार बनाएं। इस अवसर पर साध्वी कर्णिकाश्रीजी ने कहा - दुनिया में सबसे बड़ी चीज है संकल्प। अपने संकल्प देवता को जागृत कर नए साल में नए कीर्तिमान बनाएं। डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने कहा - जिस प्रकार पायलट उडान भरते समय एवं लैंड करते समय चेक लिस्ट मैच करता है वैसे ही आज का दिन जीवन की चेक लिस्ट मैच करने का दिन है। साध्वी समत्वयशा जी ने नव वर्ष पर सुन्दर गीत का संगान किया।

साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने मंच संचालन करते हुए टाइम, टॉक एवं थोट को मेनेज करने की बात कही। जयपुर सभाध्यक्ष शांतिलाल गोलछा, उपाध्यक्ष सुरेन्द्र सेठिया ने अपने विचार रखे। पूर्व तेयुप अध्यक्ष राजेश छाजेड़ ने आगंतुकों स्वागत सत्कार किया।

दाम्पत्य जीवन को मजबूत बनाने के लिए जरूरी है पॉजिटिव थिंकिंग

एच. डी. कोटे।

साध्वी पावनप्रभाजी ठाणा-4 के सान्निध्य में एच. डी. कोटे में दंपत्ति कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में लगभग 33 दंपत्ति ने भाग लिया, जिसमें राजस्थान समाज का भरपूर सहयोग रहा।

कार्यक्रम का मंगलाचरण पायल, हस्मिता, सोनल ने सुमधुर गीतिका से किया। इस अवसर पर साध्वी पावनप्रभाजी ने दम्पत्तियों को प्रेरणा देते हुए कहा दाम्पत्य जीवन को मजबूत और खुशहाल बनाने के लिए पॉजिटिव थिंकिंग बहुत जरूरी है। केवल उपदेश तो 25% काम करता है लेकिन प्रयोग 75% काम करता है, इसलिए पारस्परिक सौहार्द और पारिवारिक शांति के लिए 'ऊं ऐं ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं का सामूहिक जप अनुष्ठान करवाया गया। साध्वी आत्मयशाजी, साध्वी उन्नतयशाजी एवं साध्वी रम्यप्रभाजी ने खुशहाल दाम्पत्य जीवन जीने के सूत्र बताये।

आभार ज्ञापन तेरापंथ उप सभा अध्यक्ष समर्थ कोठारी ने किया। कन्हैयालाल दलाल, ओम प्रकाश, रतनलाल ढेलडिया, गणपत लोसर आदि ने सभी दम्पत्तियों को पारितोषिक वितरण किया।

लोगस्स पर वर्कशॉप का आयोजन

अहमदाबाद। डॉ. समणी मंजुप्रज्ञाजी एवं समणी स्वर्णप्रज्ञाजी के सान्निध्य में लोगस्स पाठ पर कार्यशाला का आयोजन अहमदाबाद में विजयराज, कमल सिंह डागा के निवास स्थान पर हुआ। कार्यशाला में लोगस्स से आध्यात्मिक, सामाजिक और पारिवारिक स्थितियों पर होने वाले प्रभावों की चर्चा की गई। लोगस्स के मूलभूत तत्वों की चर्चा करते हुए समणी जी ने तीर्थंकरों की स्तुति से व्यक्ति के अंदर होने वाले भाव परिवर्तन के बारे में बताया। जिज्ञासा समाधान के बाद कार्यशाला सम्पन्न की गयी।

प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों से जीवन में बदलाव संभव

सिरियारी।

आचार्य श्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान सिरियारी में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम एवं प्रेक्षा फाउण्डेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में दो दिवसीय आवासीय शिविर का आयोजन मुनि धर्मेशकुमार जी के मार्ग दर्शन में आयोजित हुआ। इस अवसर पर टी.पी. एफ. गौरव दिल्ली से समागत के.सी. जैन द्वारा विशेष प्रशिक्षण दिया गया।

मुनि धर्मेशकुमार जी ने उपस्थित टी.पी.एफ. सदस्यों को सम्बोधित करते हुए कहा- प्रेक्षा ध्यान के प्रयोगों से जीवन में बदलाव संभव है। इसके लिए सम्यक् मार्गदर्शन और सघन अभ्यास की आवश्यकता है। जीवन में भावक्रिया, प्रतिक्रिया विरति, भोजन पर नियंत्रण, मित भाषण, साधना में गतिशीलता तथा समीचीन प्रयोग किए जाएं। दिशा बोध से दशा में भी बदलाव हो सकता है। मुनि चैतन्य कुमारजी 'अमन' ने अपने वक्तव्य में कहा- तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम शिक्षित व्यक्तियों का एक विशेष मंच है, जिसमें डॉक्टर्स, वकील आदि उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति जुड़े हुए सदस्यों का समवाय है।

मुनि अमन ने आगे कहा- जीवन में अनमोल मंत्र है - आनंद और खुशी में किसी से वचनबद्ध नहीं होना, क्रोध अवस्था उत्तर नहीं देना तथा दुःखी अवस्था में कोई विशेष निर्णय नहीं लेना। राजा दशरथ द्वारा दिए गए वचन से श्रीराम को वनवास में जाना पड़ा। उसी प्रकार क्रोध और दुःखी अवस्था में लिया निर्णय स्वयं के लिए खतरनाक साबित हो जाता है। इस अवसर पर संस्थान की ओर से उपाध्यक्ष उत्तमचंद सुखलेचा ने के.सी. जैन का स्वागत किया गया।

शिविर में दिल्ली, भीलवाड़ा, जोधपुर आदि क्षेत्रों से लगभग 25 सदस्यों ने भाग लिया। टी.पी.एफ. के स्पिरिचुअल कार्यक्रम चैयरमेन डॉ. दिनेश धोका ने शिविरार्थियों का स्वागत करते हुए टी.पी. एफ. की गतिविधियों के बारे में बताया।

अनिता जैन ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन सपना जैन ने किया।

क्षेत्र में प्रवास श्रावकों में उल्लास

पालघर।

चरैवेति चरैवेति के सूत्र को पालन करते हुए गुरूकुल वास से विदाई लेकर अनेकानेक क्षेत्र का स्पर्श कर मुनि विनीत कुमार जी व मुनि आकाश कुमार जी आदि ठाणा-4 ने पालघर में भव्य जुलूस के साथ प्रवेश किया।

नव वर्ष का आयोजन ज्ञान, ध्यान, प्रत्याख्यान एवं भक्ति के द्वारा मनाया गया। संतों के आगमन से पालघर श्रावक समाज में उत्सव सा माहौल व्याप्त हो गया। आबाल वृद्ध सभी इसमें शामिल थे। विभिन्न संघ प्रभावी कार्यक्रम के द्वारा नए साल की अगवानी की गई। 25 बोल की प्रतियोगिता व उससे संबंधित आध्यात्मिक क्रिकेट का आयोजन किया गया। मुनि हितेन्द्रकुमार जी व मुनि पुनीत कुमार जी के द्वारा अवधान का प्रयोग करवाया गया। जिसको देखने के लिए तेरापंथ समाज ही नहीं अन्य सम्प्रदाय के पदाधिकारी भी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में महाराष्ट्र शिवसेना के प्रवक्ता केदार काके व उनकी धर्म पत्नी उज्जवला काके भी उपस्थित थे। वे इतने प्रभावित हुए कि भरे कार्यक्रम में साष्टांग वंदना की और संतों की प्रशंसा की।

नव वर्ष की पूर्व संध्या पर भव्य भक्ति संध्या का आयोजन किया गया। नव वर्ष का वृहत् मंगल पाठ विभिन्न आगमिक व प्राचीन मंत्रों के साथ आल्हादकारी रहा। श्रावकों ने सामूहिक सवा लाख का ओम भिक्षु का जाप भी किया।

तेरापंथ भवन में नवनिर्मित डोरमेटरी का उद्घाटन

ट्रिप्लीकेन, चेन्नई। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ भवन, ट्रिप्लीकेन, चेन्नई के तीसरी मंजिल पर नवनिर्मित डोरमेटरी का उद्घाटन जैन संस्कार विधि से संस्कारक स्वरुप चन्द दाँती के द्वारा विधिवत सम्पादित हुआ। नमस्कार महामंत्र एवं विविध मंत्रों के उच्चारण एवं मंगल स्मरण के साथ उद्घाटन की प्रक्रिया संपन्न हुई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रुप में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा आंचलिक संयोजक विमल कुमार चिप्पड, सभा प्रभारी ललित दुगड उपस्थित थे। मुख्य अतिथियों ने रिबन खोलकर जयकारों के साथ डोरमेटरी में मंगल प्रवेश किया। इस समारोह में ट्रिप्लीकेन तेरापंथ ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी संतोषकुमार धाडीवाल, पूर्व प्रबंध न्यासी गौतमचन्द सेठिया आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। शंकर नेत्रालय के सौजन्य से निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन भी रखा गया।

नवीनीकृत योगक्षेम ध्यान केंद्र का उद्घाटन

नई दिल्ली।

छतरपुर स्थित अध्यात्म साधना केंद्र में नवीनीकृत योगक्षेम ध्यान केंद्र का भव्य उद्घाटन समारोह जैन संस्कार विधि से संस्कारक संजय खटेड़, विमल गुनेचा, प्रकाश सुराणा, अनिल सेठिया, अशोक सिंघी ने सम्पूर्ण विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से संपादित करवाया। योगक्षेम ध्यान केंद्र का उद्घाटन भारत के पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद व उनकी धर्मपत्नी सविता कोविंद के करकमलों से हुआ। इस अवसर पर पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने आचार्य श्री महाश्रमण जी के साथ हुई उनकी भेंट वार्ताओं को याद करते हुए समाज को योगक्षेम ध्यान केंद्र के उद्घाटन पर शुभकामनाएं संप्रेषित की।

कार्यक्रम में कल्याण परिषद् संयोजक व अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी के. सी. जैन, समाजसेवी व आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति दिल्ली के अध्यक्ष के. एल. जैन पटावरी, दिल्ली सभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया, योगक्षेम ध्यान केंद्र के सहयोगी स्व.लाला शेर सिंह जैन (हांसी) परिवार से राजेश जैन के साथ समाज के विशिष्ट अतिथिगणों, विभिन्न सभा संस्थाओं के पदाधिकारियों की उपस्थिति रही।

संस्कारकों ने जैन संस्कार विधि व मंगलभावना यंत्र के बारे में सभी को अवगत करवाया व वर्ष भर में 1 कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संपादित करवाने की प्रेरणा दी। तेयुप दिल्ली की ओर से मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 जनवरी- 02 फरवरी, 2025

कच्छ
एक परिचय

कच्छ भारत के गुजरात राज्य का एक ज़िला है, जिसका मुख्यालय भुज है। भारतीय भौगोलिक दृष्टि से 'कछुए' के आकार के कारण यह कच्छ प्रदेश के रूप में प्रसिद्ध हुआ। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह देश का सबसे बड़ा ज़िला है।

कच्छ का शाब्दिक अर्थ है कुछ ऐसा जो बीच-बीच में गीला और सूखा हो जाता है। इस जिले का एक बड़ा हिस्सा कच्छ के रण के रूप में जाना जाता है, जो उथली आर्द्रभूमि है। यह बरसात के मौसम में पानी में डूब जाता है और अन्य मौसमों में सूख जाता है। रण अपने दलदली नमक के मैदानों के लिए जाना जाता है, जो मानसून की बारिश के बाद उथले पानी के सूखने पर बर्फ़ की तरह सफ़ेद हो जाते हैं।

कच्छ ने सिंधु घाटी सभ्यता, मौर्य, चालुक्य और मुगलों सहित विभिन्न राजवंशों का शासन देखा है। इस क्षेत्र का इतिहास सांस्कृतिक प्रभावों से भरा हुआ है, जहाँ स्वदेशी परंपराएँ बाहरी प्रभावों के साथ मिलती हैं। भूकंप और आक्रमणों के बावजूद कच्छ ने अपनी विशिष्ट विरासत को बनाए रखा है, जो कला, शिल्प और सांस्कृतिक प्रथाओं के मिश्रण के रूप में दिखाई देती है।

कच्छ को 1956 में बॉम्बे राज्य में शामिल किया गया था। 1960 में महाराष्ट्र और गुजरात के विभाजन के बाद यह गुजरात का हिस्सा बन गया।

कच्छ की आबोहवा के लिए एक कहावत है –

सियाले सोरठ भलो, उनाले गुजरात।
वरसे तो वागड़ भलो, कच्छड़ो बारे मास।।

कच्छ और जैन धर्म

कच्छ में एक हजार वर्षों से भी अधिक प्राचीन जैन मंदिर जैन धर्म के प्रचार की गाथा गाते हैं। यहाँ मूर्तिपूजक यति वर्ग का प्रभुत्व था, जिसका प्रभाव शासक वर्ग पर भी था। धीरे-धीरे सौराष्ट्र के एकल पात्रिया साधुओं का यहाँ आगमन प्रारंभ हुआ। ये साधु वेश धारण करते, पैदल यात्रा और भिक्षाचरण करते हुए खुद को श्रावक कहते थे। इसके बाद स्थानकवासी मुनियों का आगमन और तेरापंथ धर्मसंघ का प्रचार प्रारंभ हुआ।

वर्तमान में कच्छ का जैन समाज अपनी विशेष पहचान रखता है। यहाँ तेरापंथ जैन संघ की तुलना में मूर्तिपूजक (देरावासी) और स्थानकवासी जैन समाज की संख्या अधिक है। जैन समाज के श्रीमाली, गुर्जर और ओसवाल समुदाय का राजस्थान के भीनमाल और जोधपुर के निकट ओसियाजी गाँव से संबंध रहा है। यहाँ जैन समाज के सात गच्छ परिवार हैं – तपागच्छ, अचलगच्छ, खतरगच्छ, छ कोटि, आठ कोटि नानी पक्ष, आठ कोटि मोटी पक्ष और तेरापंथ।

कच्छ और तेरापंथ

कच्छ में तेरापंथ का प्रवेश आचार्य भिक्षु के समय में ही हुआ। भिक्षु स्वामी के प्रथम श्रावक गेरुलालजी व्यास अपने व्यापारिक कार्य से मांडवी आए थे। वहाँ उनकी मुलाकात स्थानकवासी श्रावक टीकमजी डोशी से हुई। धर्म चर्चा के दौरान टीकमजी डोशी ने भिक्षु स्वामी के सिद्धांतों को समझा और आचार्य भिक्षु को गुरु रूप में स्वीकार किया। यह घटना वि.सं. 1851 की है, जिसे कच्छ में तेरापंथ के बीजवपन के रूप में माना जाता है।

इसके बाद टीकमजी डोशी के प्रयासों से बेला, देशलपर, गेड़ी, मौवाणा, अंजर, मुंद्रा और मांडवी के कई परिवार तेरापंथ धर्मसंघ से जुड़े।

फतेहगढ़ और तेरापंथ

संवत 1927 में मुनि बींजराजजी की प्रेरणा से फतेहगढ़ क्षेत्र में तेरापंथ का विस्तार हुआ। मूलचंदजी कणबी के प्रयासों से यहाँ सैकड़ों परिवार तेरापंथी बने। फतेहगढ़ और बेला कच्छ के तेरापंथ धर्मसंघ के मुख्य केंद्र बने।

तेरापंथ के आचार्य और कच्छ

तेरापंथ के तृतीय आचार्य रायचंदजी ने संवत् 1889 में कच्छ की यात्रा की। उनका बेला में 10 दिनों का प्रवास हुआ। उनकी इस यात्रा ने कच्छ के श्रावक समाज में नवजीवन का संचार किया। सप्तम आचार्य डालचंदजी ने अपने मुनि जीवन में कच्छ की तीन यात्राएँ कीं और पाँच चातुर्मास यहाँ किए। उनकी प्रभावशाली वाणी ने कच्छ के हर वर्ग पर अमिट छाप छोड़ी। आचार्य तुलसी ने वि.सं. 2024 (1967) में कच्छ की यात्रा की। 28 दिनों की इस यात्रा में उन्होंने अणुव्रत का प्रचार किया और तेरापंथ को स्थायी पहचान दिलाई। आचार्य महाश्रमणजी ने 2013 में 44 दिनों तक कच्छ में प्रवास किया, जिससे यहाँ तेरापंथ समुदाय को विशेष पहचान मिली।

कच्छ से दीक्षित साधु-साध्वियाँ

कच्छ से अब तक तेरापंथ धर्मसंघ में 30 दीक्षाएँ हुई हैं। इनमें सर्वप्रथम दीक्षा मुनि लीलाधारजी (गणमुक्त) की हुई। साध्वियों में सर्वप्रथम दीक्षा साध्वी मूलांजी की सं. 2005 में हुई।

वर्तमान में कच्छ क्षेत्र के 18 साधु-साध्वी और समणी तेरापंथ धर्मसंघ में साधनारत हैं

1. मुनि अनंतकुमारजी
2. मुनि सिद्धार्थकुमारजी
3. साध्वी विवेकश्री
4. साध्वी मुक्तिश्रीजी
5. साध्वी हेमलताजी
6. साध्वी मंगलयशाजी
7. साध्वी मलययशाजी
8. साध्वी मल्लिकाश्रीजी
9. साध्वी गौरवयशाजी
10. साध्वी केवलयशाजी
11. साध्वी नवीनप्रभाजी
12. साध्वी अर्चनाश्रीजी
13. साध्वी रुचिरप्रभाजी
14. समणी हिमप्रज्ञाजी
15. समणी करुणाप्रज्ञाजी
16. समणी जिज्ञासाप्रज्ञाजी
17. समणी क्षांतिप्रज्ञाजी
18. समणी ख्यातिप्रज्ञाजी

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
27 जनवरी- 02 फरवरी, 2025

161वें मर्यादा महोत्सव पर विशेष आलेख

मर्यादा महोत्सव एक कल्प प्रयोग

● मुनि मोहजीतकुमार ●

भारतीय संस्कृति एवं इतिहास में अनेक उत्सवों का अपना उत्स और महात्म्य है। भारत में किसी न किसी धर्म, परम्परा आदि से जुड़ा हुआ उत्सव हर दिन त्योहार सा बन जाता है। ऐसे दिन प्रेरणा के प्रतीक भी बन जाते हैं। तेरापंथ धर्मसंघ की उर्जस्वल परम्परा से जुड़ा एक उत्सव जिसे मर्यादा महोत्सव के नाम से पहचाना जाता है। यह पर्व लौकिकता से पृथक अलौकिक भाव चेतना के साथ जुड़ा हुआ है।

यह उत्सव तेरापंथ का महाकुम्भ है। इसमें आचार्य द्वारा निर्दिष्ट साधु-साध्वियों के वर्ग सम्मिलित होकर साधुता की तेजस्विता, कर्तृत्व की कर्मशीलता एवं नव सृजन के निष्ठा का भाव जगाते हैं। मर्यादा और अनुशासन की भाव धारा से बंधा यह महोत्सव एक गुरु और एक विधान के प्रति समर्पित रहने के संस्कारों का विकास एवं सघनता के लिए प्रेरणा और प्रशिक्षण का महान उपक्रम है। तेरापंथ एक सुगठित धर्मशासन है, पर इसका यह अर्थ नहीं है कि आगे इसके विकास की कोई संभावना न हो इस अर्थ में हमें निश्चय ही वर्तमान के प्रति आश्वस्त-विश्वस्त होना चाहिए।

तेरापंथ की अपनी मौलिक विशेषता है- संगठन पक्ष। देह और आत्मा की तरह संगठन और साधना दो भिन्न तत्व होते हुए भी अभिन हैं। हमें देह से ही आत्मा का परिचय होता है। आत्म परिचय के साथ हम देह से मुक्ति की यात्रा कर सकते हैं। आत्म तत्व की प्राप्ति के लिए साधना का शिखर प्राप्त करना जितना अपेक्षित है उतना ही संगठन के साथ जुड़ कर अपने आपको भावित करना जरूरी है। संगठन से जुड़ने का अर्थ साधना के लिए समर्पित होना है।

विश्व में तेरापंथ धर्म संघ का एक विशिष्ट उदाहरण है कि जहाँ संगठन की सौष्ठवता के लिए मर्यादा महोत्सव मनाया जाता है। तेरापंथ धर्मसंघ मर्यादा और अनुशासन की दृष्टि से उच्चता को प्राप्त है। यदि हम इसकी मीमांसा में जाएं तो हमें तीन बातें विशेष रूप से नजर आएंगी। श्रमण महावीर ने अनुशासन के जो सूत्र दिए वे निश्चित रूप से तेरापंथ के संगठन की आधार शिलाएं हैं। इस आधार पर तेरापंथ ने जो अनुशासन के क्षेत्र में विकास किया है, उसके तीन प्रमुख आधार हैं - सुसंगत संविधान, जागरुक नेतृत्व तथा सदस्यों का समर्पण भाव। इन तीन तत्वों पर तेरापंथ की विशिष्टता जगत मान्य है।

आचार्य भिक्षु ने नेतृत्व को बहुत महत्व दिया। उन्होंने तत्कालीन साधु-समाज की स्थिति के संदर्भ में अनुभव किया - मर्यादा के बिना साधु वर्ग की आचार चर्या को सुरक्षित नहीं रखा जा सकता। इस अनुभव के आलोक में आचार्य भिक्षु ने संवत् 1832 में तेरापंथ धर्म संघ का पहला संविधान लिखा। शिष्य मुनि भारमल्लजी को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। इसके साथ ही एक नेतृत्व की परम्परा का सूत्रपात हो गया।

आचार्य भिक्षु ने उस मर्यादा पत्र में समय-समय पर अनेक संशोधन और परिष्कार किए। सन् 1859 में अन्तिम संविधान-पत्र लिखा। वह लिखत (मर्यादा-पत्र) आज भी तेरापंथ धर्मसंघ का आधारभूत संवैधानिक दस्तावेज बना हुआ है।

आचार्य भिक्षु ने इसकी नींव में मर्यादा का ऐसा शिलाखण्ड रखा जो इस महल को निरन्तर सुदृढ़ आधार प्रदान कर रहा है। आचार्य भिक्षु के बाद श्रीमद् जयाचार्य ने उनके अनुभवों का लाभ उठाते हुए तेरापंथ को एक नया अवदान प्रदान किया। जिसकी पहचान मर्यादा महोत्सव के रुप में विश्व व्यापी बनी। मर्यादा महोत्सव तेरापंथ की अनुशासन, व्यवस्था, प्रगति, नवसृजन, प्रेरणा, प्रोत्साहन, सारणा-वारणा, अतीत की समीक्षा वर्तमान का चिन्तन तथा भविष्य की कल्पना का महान उत्सव है। तेरापंथ के महा-कुम्भ मर्यादा महोत्सव के अवसर पर आचार्य गत वर्ष का सिंहावलोकन करते हुए वर्ष भर में हुए कार्यों की समीक्षा करते है।

नई नीतियों को लागू करते हैं। आचार्य की सन्निधि में साधना, संघीय विकास एवं जनहित सम्बन्धी विभिन्न विषयों पर संगोष्ठियां होती हैं। तेरापंथ के संविधान के प्रति सजगता, समर्पण एवं आत्मनिष्ठा के संस्कारों को प्रगाढ़ बनाने का पाथेय अनुशास्ता द्वारा सलक्ष्य प्रदान किया जाता है। स्वास्थ्य, संयम एवं सुखद सहवास के लिए साधु-साध्वियों को अन्तरंग व्यवस्थाएं भी इस अवसर पर आचार्य का मुख कार्य होता है, जिसे आचार्य मन और आत्मीय भाव से करवाते हैं।

तेरापंथ के प्राणतत्त्व हैं – मर्यादा, अनुशासन और व्यवस्था

● मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ●

भारतीय परम्परा में मर्यादा की महिमा सर्वकालीन रही है। मर्यादा पुरुषोतम राम को इसीलिए तो कहा गया है कि उन्होंने अपनी मर्यादा को समझा, जाना और जीया। उन्होंने अपने पद और कर्तव्यों से जुड़ी प्रत्येक मर्यादा का निष्ठापूर्वक पालन किया। चाहे वे वनवास में रहे, युद्धभूमि में रहे अथवा राज्य का संचालन किया। जो व्यक्ति, परिवार, संघ-समाज में अपनी मर्यादा का पालन करता है वह सम्माननीय, पूजनीय बन जाता है और दूसरों के लिए आदर्श बन जाता है। तेरापंथ धर्मसंघ के संस्थापक आचार्य भिक्षु ने जब धर्मसंघ की स्थापना की तो उन्होंने अपनी दूरगामी सोच के साथ मर्यादाओं का निर्माण किया। वे मानवीय प्रकृति से परिचित थे। इसीलिए उन्होंने भविष्य को जानते हुए, देखते हुए जिन मर्यादाओं का निर्माण किया था उसे स्वीकृति प्रदान करने के लिए किसी पर दबाव नहीं डाला बल्कि स्वेच्छा से स्वीकृति प्रदान करने का सुझाव दिया। उन्होंने स्पष्ट कहा- 'भलीभांति साधुपन पलता जाने, गण में अथवा अपने आपमें साधुपन माने तो गण में रहें। वंचनापूर्वक गण में रहने का त्याग है।'

आचार्य भिक्षु एक विधिवेत्ता आचार्य थे। मनोवैज्ञानिक आचार्य थे। वे व्यक्ति के मनोभावों को जानते हुए बात करते थे। उनका अतीन्द्रिय ज्ञान विकसित था। अतः ढाई सौ वर्ष पूर्व जिन मर्यादाओं का सूत्रपात उन्होंने किया था वे आज भी उसी रूप में अक्षुण्ण हैं। कौन जानता था कि यह धर्मसंघ इतना शक्ति सम्पन्न होगा और धर्मसंघ इतने लम्बे समय तक चलता रहेगा, किन्तु आज भी यह अपनी शान के साथ चल रहा है। इसके पीछे आचार्य भिक्षु की दूरगामी सोच तथा उत्तरवर्ती आचार्यों का समसामयिक चिंतन तथा धर्मसंघ के सदस्यों में मर्यादाओं के प्रति निष्ठा से पालन की भावना है। आज भी आचार्य की आज्ञा, अनुशासन, मर्यादा और व्यवस्था का मनोभाव से पालन हो रहा है। जिस संघ-समाज और राष्ट्र में कानून अथवा नियमों के प्रति आस्थाभाव नहीं होता है वह स्थिर नहीं हो सकता। तेरापंथ धर्मसंघ का चिर जीवित होने का मूल कारण है- मर्यादाओं के प्रति निष्ठा का भाव। जहां मर्यादा के प्रति निष्ठा का भाव है वहां पालना भी संभव है।

प्राकृतिक क्षेत्र में देखा जाय तो सभी अपनी मर्यादाओं में रहकर ही उपयोगी बने हुए हैं। जब कभी प्रकृति अपनी मर्यादा से विपरीत होती है तो खतरनाक साबित हो जाती है। सबकी अपनी-अपनी मर्यादा होती है। व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र-अपनी मर्यादा में रहकर ही उपयोगी साबित होते है। आज हम देखते हैं कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता होने के बावजूद व्यक्ति सामाजिक व राष्ट्रीय कानूनों से आबद्ध है। उस पर सामाजिक व राष्ट्रीय कानून लागू है।

राष्ट्र का अपना संविधान है। उसका पालन करना प्रत्येक नागरिक के लिए आवश्यक है। तेरापंथ धर्मसंघ का भी एक संविधान है। एक आचार, एक विचार, एक आचार्य केन्द्रित धर्मसंघ में व्यक्तिगत स्वतंत्रता होने बावजूद आचार्य द्वारा प्रदत्त हर मर्यादा का पालन अनिवार्य है। कुछ नियम ऐसे हैं जो सम सामयिक होते हैं, जिन्हें संघहित में लागू किया जाता है और द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के साथ निरस्त भी किया जा सकता है। जिस युग में आचार्य जिन मर्यादाओं को लागू करते हैं वर्तमान आचार्य उनमें परिवर्तन या संशोधन भी कर सकते हैं, आचार्य भिक्षु ने उत्तरवर्ती आचार्यों का यह अधिकार भी दिया है। उन्होंने स्पष्ट लिखा है- मैंने जिन मर्यादाओं का निर्माण किया है, उत्तरवर्ती आचार्य उचित समझें तो उसमें परिवर्तन, संशोधन अथवा नई मर्यादा का निर्माण करें। धर्मसंघ के प्रत्येक सदस्य उसे सहर्ष स्वीकार करे।

तेरापंथ के प्रत्येक सदस्य में अनाग्रह का भाव है। इसीलिए यह धर्मसंघ आदर्श के रूप में मान्य है। निष्कर्ष की भाषा में कहा जाए तो वही संघ-समाज और राष्ट्र तरक्की कर सकता है जिसमें नियमों के प्रति आस्था हो, निष्ठापूर्वक पालन हो, इससे समाज में समरसता, राष्ट्र में शान्ति का वातावरण हो सकता है। तेरापंथ धर्मसंघ में वर्तमान आचार्य की साधना और शासना का ही प्रभाव है कि यह धर्मसंघ समय की समझ के साथ निरन्तर गतिशील है। मर्यादा-महोत्सव के सुपावन अवसर पर आचार्य प्रवर द्वारा प्रदत्त संदेश, दिशानिर्देश पर चलना ही सबके लिए हितकर व कल्याणकारी है। एकतंत्र में राजतंत्र और राजतंत्र में एकतंत्र ही धर्मसंघ की पहचान है। मर्यादा, अनुशासन और व्यवस्था तेरापंथ के प्राण तत्त्व हैं।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 जनवरी- 02 फरवरी, 2025

161वें मर्यादा महोत्सव पर विशेष

मर्यादित यह संघ महान

● साध्वी अणिमाश्री ●

● डॉ. साध्वी सुधाप्रभा ●

मर्यादा की गौरव गाथा, आज सुनाएं हम मिलकर।
'मेरं शरणं गच्छामि' का मंत्र बड़ा ही क्षेमंकर।।

1. आर्य भिक्षु की लोह लेखनी से सज्जित यह संघ महान्।
मर्यादित अनुशासित गण यह, जिनशासन की उज्ज्वल शान।
मर्यादा को शीश झुकाएं, मर्यादा ही श्रेयस्कर।।

2. जयाचार्य को नमन हमारा, दिया संघ को नव उपहार।
मर्यादा और अनुशासन है, तेरापंथ के पहरेदार।
मर्यादोत्सव जयाचार्य के, नव चिन्तन का हस्ताक्षर।।

3. तेरापंथ के भव्य भाल पर, मर्यादा का सुन्दर ताज।
जन-जन के मुख पर अनुगुंजित, मर्यादा का मधुरिम साज।
महाकुंभ में अवगाहन कर, बन जाए हम अजर-अमर।।

4. मर्यादा के महादेव की, 'भुज' में सन्निधि वरदाई।
तेरापंथ की गली-गली में, गूंज रही यश शहनाई।
'भाग्योदय' से भुज ने पाया, मर्यादोत्सव का अवसर।।

तर्ज - कलियुग बैठा मार कुंडली

हंसता खिलता शासन उपवन

● साध्वी मधुस्मिता ●

हंसता खिलता शासन उपवन, हमको प्राणों से प्यारा है।
अद्भुत आकर्षक दर्शनीय दुनियां में सबसे न्यारा है।।

1. तेरापंथ गण उर्वर धरती, यहां अनुशासन के फूल खिले,
गुरु ही ब्रह्मा गुरु ही विष्णु गुरु शंकर स्वर का पवन चले।
मर्यादा सुरतरू की छाया, साधक का सबल सहारा है।।

2. सीमा में बहता सलिल सदा, निर्मल उपयोगी कहलाता,
मर्यादा में रहने वाला सागर सबके मन को भाता।
नभ सीमा में दीपित दिनकर, बनता जग का उजियारा है।।

3. संरक्षक पोषक संघ सदन, सारी ऋतुओं में सुखकारी,
मां-पिता तुल्य आश्वस्त बनाता विघ्न हरण मंगलकारी।
गणनायक तुलसी महाप्रज्ञ ने बदली युग की धारा है।।

4. है अतुलबली दृढ संकल्पी, गुरू महाश्रमण नेमानन्दन,
नत मस्तक जिनके चरणों में श्रद्धा परि-पूरित है जन-जन।
मर्यादोत्सव की महनीय छटा भुज शहर बना मनहारा है।।

तर्ज - है प्रीत जहां

सेवा श्रद्धा चन्दन है

● डा. साध्वी परमयशा ●

सेवा श्रद्धा चन्दन है, भिक्षु गण नन्दनवन है।
भिक्षु हो, भिक्षु आ, महाश्रमण को वंदन है।।

1. सेवा की सौरभ सुषमा, नहीं जिसकी कोई उपमा।
दसों दिशाएं हरसाए, युग आस्था में रम जाएंगे।।

2. फूल-फूल में सेवाभाव, आकर्षण का दिव्य प्रभाव।
गीत प्रीत के गाएंगे, नया सवेरा लाएंगे।।

3. महानिर्जरा पर्यवसान, सेवा है पुण्यों की खान।
आत्मशुद्धि का पैमाना, नहीं कोई है अनजाना।।

4. तीर्थंकर का गोत्र बंधे, सेवा शुद्ध भाव सधे।
महावीर की वाणी है, भव्यों की सहनाणी है।।

5. नन्दीसेन मुनि ज्यों सेवा, जो करता खाता मेवा।
सेवा गण का प्राण है, संगठन महान है।।

6. हर वर्ष हो नियुक्ति, सेवा की सुदृढ़ सूक्ति।
सस्मित शीश झुकाते हैं, गुरूवर जब फरमाते हैं।

तर्ज - प्रज्ञा के दीप जलेंगे

मेरा संघ मेरा सम्मान

● साध्वी काव्यलता ●

आचार्य श्री तुलसी के शब्दों में:

संघः शरणं त्राणं गति प्रतिष्ठा च साधना धारः।
तस्मात् भूयो भद्रं भूयाद् धन धाय धर्म संघायः।।

यह संघ हमारा त्राण है, शरण है, गति है, प्रतिष्ठा है। यह तभी संभव है जब 'मैं गण का और गण मेरा है' यह भावना साधक के रोम-रोम में रम जाती है और गण के साथ हम एकीभूत हो जाते हैं। फूल तभी पूजा के योग्य होता है जब डाली से संयुक्त होता है। उसी प्रकार, अनुशासन और मर्यादा में रहते हुए जब गुरु इंगित की आराधना की जाती है, तो संघ हमारा सम्मान करता है।

संघ एक रमणीय उपवन है

जैसे एक उपवन नाना प्रकार के फूलों से सुसज्जित होता है, उसी प्रकार तेरापंथ धर्म संघ के साधु-साध्वियाँ अपनी आज्ञा निष्ठा, गुरु निष्ठा, एवं आचार निष्ठा से संघ रूपी उद्यान को सुसज्जित बनाए हुए हैं। वे केवल तेरापंथ समाज को ही नहीं, बल्कि पूरी मानव जाति को सुवासित करते हैं।

मेरा संघ कल्पवृक्ष है

जैसे कल्पवृक्ष की छाया में हर व्यक्ति अपनी इच्छा की पूर्ति करता है, उसी प्रकार इस धर्म संघ की शीतल छाया में हर साधक असीम आनंद एवं चित समाधि की अनुभूति करता है। आध्यात्मिक विकास के साथ जीवन प्रगति के नए-नए द्वार उद्घाटित करता है। यह तभी संभव है, जब गण के साथ हमारा आंतरिक अनुबंध होता है।

संघ एक चिकित्सालय है

जैसे एक शल्य चिकित्सक रोगी को शारीरिक स्वास्थ्य प्रदान कर प्रसन्न करता है, उसी प्रकार तेरापंथ धर्म संघ में गुरु एक महान चिकित्सक होते हैं, जो मानसिक और भावनात्मक चिकित्सा के द्वारा संघ के हर सदस्य को साधना के पथ पर आरोहण करवाते हैं। यह चिकित्सा तेरापंथ धर्म संघ में ही संभव है, क्योंकि यहाँ हर सदस्य की गण-गणपति के प्रति एकतारी होती है।

आचार्य तुलसी ने अपने गीत में लिखा है

गण आपां रो आपां गणरा ओ आच्छो अनुबंध है,
धागे में पिरोई माला सारी सो संबंध है।

संघ एक दर्पण है

दर्पण में व्यक्ति स्वयं का प्रतिबिंब देखता है। किंतु संघ एक ऐसा दर्पण है, जिसमें व्यक्ति केवल बाहरी नहीं, आंतरिक निरीक्षण भी कर सकता है और आत्मावलोकन के द्वारा साधना के गहन तथ्यों को प्राप्त कर सकता है।

आचार्य भिक्षु ने कष्टों की कजराली रातों में भगवान महावीर को प्रतीक मानकर इस संघ की नींव रखते हुए कहा

हे प्रभो यह तेरापंथ।

संघ में जहाँ अनुशासन और मर्यादा का महत्व है, वहीं गुरु आज्ञा का विशेष महत्व है। गुरु आज्ञा संघ में दीक्षित साधु-साध्वियों का जीवन आधार है। आचार्य महाप्रज्ञ जी ने कहा है:

कोई साधु पढ़ा-लिखा कम है, प्रवचनकार, लेखक, कवि, साहित्यकार नहीं है, पर जिसने गुरु आज्ञा में रहना सीख लिया, उसने संघ में जीना सीख लिया, और उसी का संघ में सम्मान है।

इसके अनेक उदाहरण हैं। जिसने धर्म संघ को छोड़ा, उसका आज कोई अस्तित्व नहीं है। तेरापंथ धर्म संघ के आचार्यों ने सदा संघ का सम्मान किया। उसी के कारण यह तेरापंथ धर्म संघ विश्व के सभी संघों में अद्वितीय है।

सेवा संघ की धड़कन है

इस संघ में सेवा का बहुत महत्व है। सेवा इस संघ की धड़कन है, श्वास है, निःश्वास है। आचार्य महाश्रमण जी ने कहा है:

'जो साधु-साध्वियाँ वृद्ध एवं ज्ञान साधु साथियों की सेवा करते हैं, वे आचार्यों की सेवा करते हैं। उन पर गुरु की कृपा अनवरत बरसती है।'

संघ में केवल व्यक्ति की पूजा नहीं होती, बल्कि उसके भीतर जो गुण हैं, उनका सम्मान होता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि आचार्यों ने रत्नाधिक साधु-साध्वियों का सम्मान किया है। वे रत्नाधिक संत-सतियाँ अपनी विनम्रता से आचार्यों एवं संघ का मान बढ़ाते हैं।

'मेरा संघ वात्सल्य, सौहार्द, सेवा, समर्पण का बहता निर्झर है, जहाँ सतत इन गुणों का आदान-प्रदान होता है।'

वर्तमान में आचार्य श्री महाश्रमण जी जिस रूप में संघ का संचालन कर रहें हैं और हर शिष्य की चित समाधि का ध्यान रखते हैं, उसे मैं शब्दों में बाँध नहीं सकती।

संघ का सम्मान मर्यादा और अनुशासन से है। यदि हम मर्यादित जीवन जीने में विश्वास रखें और अनुशासन में निष्ठा रखें, तो 'मेरा संघ, मेरा सम्मान' यह उक्ति चरितार्थ हो सकती है।

संघ के हम पुजारी ही नहीं, अधिकारी भी हैं।

कर्तव्य के साथ संघ विकास की ज़िम्मेदारी भी हमारी है।

आस्था का समंदर है तेरापंथ धर्म संघ।

सुरक्षा चाहते हो, तो संघ रक्षा की ज़िम्मेदारी भी हमारी है।

गण ये हमारा हमारी पहचान

● - साध्वी संगीतप्रभा ●

गण के थे हम, गण के रहें, गण के रहेंगे हम,
हर सांस में, हर आस में, जब तक रहेगा दम।
गण ये हमारा, हमारी पहचान,
चमन ये हमारा, हम इस पे कुर्बान।।
वंदे शासनम् वंदे शासनम् वंदे शासनम्।

1. मर्यादा की दीवारें इस संघ भवन की रक्षक हैं,
अनुशासन की छत इस गण की हर पल स्वयं निरीक्षक है।
विनय समर्पण से अभिमंडित ईंट-ईंट इस गण की,
संविभाग का परकोटा शोभा इस नंदनवन की।
कहते थे हम, कहते रहें, कहते रहेंगे हम,
गण वर्धमान है प्रवर्धमान महिमा न होगी कम।।

2. ओजस्वी नेतृत्व संघ यश को नभ तक पहुंचाए,
घोर तपस्वी संत सती गण नीवों को गहराए।
शासन रक्षक सुरगण चिंहुदिशि नंदीघोष बजाए,
जय-जय नंदा जय-जय भद्दा नभ धरती गुजाएं।
सुनते थे हम, सुनते रहें, सुनते रहेंगे हम,
गण वर्धमान है प्रवर्धमान महिमा न होगी कम।।

3. 'आसासो विसासो' भैक्षव गण हम सबकी शान है,
संघ शरण, गति और प्रतिष्ठा हम सबका अरमान है।
'चएज्ज देहं न हु धम्म शासणं' नस-नस में रम जाए,
लहू के कतरे-कतरे में, गुरु भक्ति रस घुल जाए।
गाते थे हम, गाते रहें, गाते रहेंगें हम,
गण वर्धमान है प्रवर्धमान महिमा न होगी कम।।

तर्ज - वतन ये हमारा

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
27 जनवरी- 02 फरवरी, 2025

संबोधि

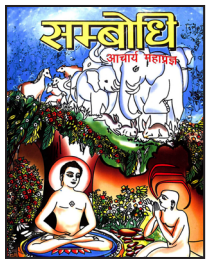

गृहिधर्मचर्या

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

आत्मवादी के लिए कोई 'दूसरा' नहीं होता और अनात्मवादी के लिए कोई 'एक' नहीं होता। एक बाहर देखता है और एक भीतर। जो भीतर उतरा, उसने पाया अभेद और जो बाहर खोजता रहा उसने पाया भेद। असुर और देवता एक आत्मद्रष्टा ऋषि के पास पहुंचे। ऋषि से आत्मबोध की याचना की। संत ने कहा-'तत्त्वमसि' जिसे खोज रहे हो वह तुम ही हो। दोनों चले आए। दोनों को संतोष हो गया कि यह देह ही आत्मा है। दोनों भोग-विलास में मस्त हो गए। किन्तु देवता को संतोष नहीं हुआ। उसे लगा-गुरु संत इस शरीर के लिए नहीं कह रहे हैं। यह शरीर तो प्रत्यक्ष मरणधर्मा है। वह आया और पूछा-क्या आपका अभिप्राय आत्मा शब्द से शरीर से है? किन्तु शरीर विनश्वर है, आत्मा नहीं। संत ने उसी तत्त्व का उपदेश फिर दिया वह तू ही है। प्राण के विषय में सोचा, किन्तु लगा प्राण तो उससे ही स्पंदित होते हैं। वह न हो तो प्राणों का क्या मूल्य! फिर मन के संबंध में सोचा। मन चंचल हैं। प्रतिक्षण बदलता रहता है। वह आत्मा तो अपरिवर्तनीय है। मैं मन से पार जो अनंत शक्ति सम्पन्न, अजर, अमर है 'वह हूं।' जिज्ञासा से अपने भीतर जो था उसे खोज लिया। असुर देह पर रुक गए। देवता मंजिल पर पहुंच गए। देवता अभेद में जीने लगे और असुर द्वैत में।

महावीर का यह स्वर पूर्ण अद्वैतवाद का है। वे कह रहे हैं-दूसरा कोई नहीं है। किन्तु जिनकी प्रज्ञा-चक्षु निमीलित है, वे बाह्य भेद के आधार पर दूसरों का उत्पीड़न करते हैं, शोषण करते हैं। उन्हें अपने अधीनस्थ बनाते हैं और उन पर अनुशासन करते हैं। वस्तुतः वे स्वयं की हिंसा करते हैं; स्वयं को पीड़ित करते हैं। स्वयं की असत् प्रवृत्ति से स्वयं ही बंधन में फंसते हैं। प्रत्येक आत्मा पूर्ण स्वतंत्र है। दूसरों के निमित्त से हम अज्ञानवश स्वयं को दंड देते हैं। ज्ञान के प्रकाश में गल्ती करने वाला दंडनीय है। उसे बोध नहीं है। वह तो करुणा का पात्र है। उस पर क्रोध कर स्वयं को दंड नहीं दिया जाए। खलील जिब्रान ने कहा है- 'अच्छी तरह आंख खोलकर देख, तुझे हर सूरत में अपनी सूरत नजर आएगी। अच्छी तरह कान खोल कर सुन, तुझे हर आवाज में अपनी आवाज सुनाई देगी।'

३२. परिणामिनि विश्वेऽस्मिन्, अनादिनिधने ध्रुवम्।
सर्वे विपरिवर्तन्ते, चेतना अप्यचेतनाः।।

यह संसार नाना रूपों में निरंतर परिणमनशील और आदि-अंत रहित है। इसमें चेतन और अचेतन सब पदार्थों की अवस्थाएं परिवर्तित होती रहती है।

मेघः प्राह

३३. उत्पादव्ययधर्माणो, भावा ध्रौव्यान्विताः तदा।
किमात्मा शाश्वतो देहोऽशाश्वतो विद्यते विभो!

मेघ बोला-प्रभो! सब पदार्थ उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य धर्म युक्त हैं, तब फिर आत्मा शाश्वत और देह अशाश्वत क्यों? (क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्य भारमल जी युग

साध्वीश्री दोलांजी (कांकरोली) दीक्षा क्रमांक 63

साध्वीश्री प्रकृति से भद्र व मधुर भाषी थी। आपका विनयभाव बेजोड़ था। आपने उपवास, बेले आदि तप के द्वारा शरीर से अच्छा सार निकाला। अन्त में अनशन कर स्वर्ग प्रस्थान किया।

- साभार: शासन समुद्र -

श्रमण महावीर

नारी का बन्ध-विमोचन

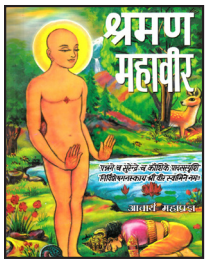

पर उसके सामने तो जगत् पिता खड़े हैं। उसकी आखें सामने की ओर उठीं और उसका अन्तःकरण बोल उठा; 'ओह! भगवान् महावीर आ रहे हैं।'

वह हर्षातिरेक से उत्फुल्ल हो गई। उसकी आखों में ज्योति-दीप जल उठे। उसका कण-कण प्रसन्नता से नाच उठा। वह विपदा को भूल गई।

भगवान् उसके सामने जाकर रुके। उन्होंने देखा, यह वही वसुमती है, जिसके देन्य की प्रतिमा मेरे मानस में अंकित है। केवल आंसू नहीं हैं। भगवान् वापस मुड़े। चन्दना की आशा पर तुषारापात हो गया। उसके पैरों से धरती खिसक गई। आंखों में आंसू की धार बह चली। वह करुण स्वर में बोली, 'भगवन्! मेरा विश्वास था, तुम नारी जाति के उद्धारक हो, दास-प्रथा के निवारक हो। पर मेरे हाथ से आहार न लेकर तुमने मेरे विश्वास को झुठला दिया। इस दीन दशा में मैं तुम्हें ही अपना मानती थी। तुम मेरे नहीं हो, यह तुमने प्रमाणित कर दिया। बुरे दिन आने पर कौन किसका होता है? मैंने इस शाश्वत सत्य को क्यों भुला दिया?'

चन्दना का मन आत्म-ग्लानि से भर गया। वह सिसक-सिसक कर रोने लगी।

भगवान् ने मुड़कर देखा- मेरे संकल्प की शर्तें पूर्ण हो चुकी हैं। वे फिर चन्दना के सामने जा खड़े हुए। उसने उबले हुए उड़द का आहार भगवान् को दिया। उसके मन में हर्ष का इतना अतिरेक हुआ कि उसके बंधन टूट गए। उसका शरीर पहले से अधिक चमक उठा।

'भगवान् ने धनावह श्रेष्ठी की दासी के हाथ से आहार ले लिया'- यह बात बिजली की भांति सारे नगर में फैल गयी। हजारों-हजारों लोग धनावह के घर के सामने एकत्र हो गए। दासवर्ग हर्ष के मारे उछलने लगा। महाराज शतानीक भी वहां पहुंच गए। महारानी मृगावती उसके साथ थी। नन्दा हर्ष से उत्फुल्ल हो रही थी। अमात्य भी एक बहुत बड़ी चिन्ता से मुक्त हो गया।

धनावह लुहार को साथ लिये अपने घर पहुंचा। वह अनेक प्रकार की बातें सुन रहा था। उसका मन आश्चर्य से आंदोलित हो गया। उसने भीतर जाकर देखा - चन्दना दिव्य-प्रतिमा की भांति अचल खड़ी है। वह हर्ष-विभोर हो गया।

अब चन्दना के बारे में लोगों की जिज्ञासा बढ़ी। वे उसके दर्शन को लालायित हो उठे। वह घर से बाहर आई। चन्दना के जय-जयकार के स्वर में जनता का तुमुल विलीन हो गया।

सम्पुल महाराज दधिवाहन का कंचुकी था। चम्पा-विजय के समय महाराज शतानीक उसे बन्दी बना कौशांबी ले आए थे। वह आज ही राजाज्ञा से मुक्त हुआ था। वह महाराज के साथ आया। उसने चन्दना को पहचान लिया। वह दौड़ा। चन्दना के पैरों में नमस्कार कर रोने लगा। चन्दना ने उसे आश्वस्त किया। दोनों एक दूसरे को देख अतीत के गहरे चिन्तन में खो गए।

महाराज ने कंचुकी से पूछा, 'यह कन्या कौन है?

'कंचुकी ने कहा, 'महाराज दधिवाहन की पुत्री वसुमती है।'

मृगावती बोली, 'तब तो यह मेरी बहन की पुत्री है।'

महाराज ने चन्दना से राजप्रासाद में चलने का आग्रह किया। उसने उसे ठुकरा दिया। महारानी ने फिर बहुत आग्रह किया। चन्दना ने उसे फिर ठुकरा दिया। महारानी ने चन्दना की ओर मुड़कर पूछा, 'तुम हमारे प्रासाद में क्यों नहीं चलना चाहती?

'दासी की अपनी कोई चाह नहीं होती।'

'तुम दासी कैसे?

'यह तो महाराज शतानीक ही जानें, में क्या कहूं?

महाराज का सिर लज्जा से झुक गया। उसे अपने युद्धोन्माद पर पछतावा होने लगा। वह चंदना के दासी बनने का कारण समझ गया। उसने धनावह को बुलाया। चंदना सदा के लिए दासी-जीवन से मुक्त हो गई। भगवान् का मौन सत्याग्रह दासी का मूल्य बढ़ाकर दासत्व की जड़ पर तीव्र कुठाराघात कर गया। (क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

गुणस्थान : आधार और स्वरूप

तीसरा गुणस्थान अध्यात्म को वह भूमिका है जहां मिथ्यात्व आश्रव अपूर्ण रहता है। वहां सम्यक्त्व और मिथ्यात्व के मिश्रण की स्थिति होती है। पहले गुणस्थान की अपेक्षा वहां मिथ्यात्व आश्रव अल्प होता है इसलिए उसे तीसरी भूमिका में रखा गया है।

चौथे गुणस्थान में मिथ्यात्व आश्रव बिलकुल नहीं रहता।

पांचवें गुणस्थान में अव्रत आश्रव आंशिक रूप से निरुद्ध हो जाता है, इसलिए उसे विरताविरत या देश विरत गुणस्थान कहा जाता है।

छठे गुणस्थान में अव्रत आश्रव सर्वथा निरुद्ध हो जाता है। वहां से साधुत्व की भूमिकाएं प्रारम्भ हो जाती हैं।

सातवां गुणस्थान वह भूमिका है जहां प्रमाद आश्रव भी निरुद्ध हो जाता है। यहां से आगे कषाय आश्रव के अल्पीकरण की भूमिकाएं प्रारम्भ हो जाती हैं।

आठवें गुणस्थान में कषाय आश्रव पतला रहता है। यहां से क्षायोपशमिक सम्यक्त्व का अस्तित्व नहीं रहता।

नवें गुणस्थान में कषाय और पतला हो जाता है। इसके प्रारम्भ में संज्वलन चतुष्क तथा अन्त में केवल लोभ ही रहता है।

दसवें गुणस्थान में लोभ और भी सूक्ष्म हो जाता है। इस प्रकार इन तीन गुणस्थानों में कषाय आश्रव की क्रमशः अल्पता होती जाती है।

ग्यारहवें गुणस्थान में कषाय अथवा मोह सर्वथा उपशान्त अवस्था में रहता है। उसकी सत्तामात्र रहती है।

बारहवें गुणस्थान में कषाय अथवा मोह सर्वथा क्षीण हो जाता है, उसकी सत्ता भी नहीं रहती। वहां केवल योग आश्रव ही रहता है।

तेरहवें गुणस्थान में योग आश्रव भी कृशत्व को प्राप्त हो जाता है। वहां मन का उस रूप में प्रयोग नहीं होता जिस रूप में एक श्रुतज्ञानी विचार विमर्श में करता है। ज्ञानावरणीय कर्म क्षयोपशम जनित समनस्कता भी वहां नहीं रहती। इस गुणस्थान के अन्त में योग प्रायः समाप्त हो जाता है। ज्ञानावरण, दर्शनावरण व अन्तराय कर्म का क्षय इस गुणस्थान की मौलिकता है।

चौदहवें गुणस्थान में योग आश्रव सर्वथा निरुद्ध रहता है। वहां कोई भी आश्रव नहीं रहता।

इस प्रकार गुणस्थान का आधारभूत तत्त्व है आश्रव का क्रमिक निरोध।

भावाः स्वरूपं जीवस्य (सान्निपातिक भाव)

भाव का शाब्दिक अर्थ है– होना। जैन दर्शन में पांच भाव बतलाए गए हैं– औदयिक, औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक और पारिणामिक। औदयिक भाव आठ कर्मों के उदय से सम्बन्धित है। औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक भाव कर्म के विलय से निष्पन्न होने वाली जीव की अवस्थाएं हैं।

पारिणामिक भाव व्यापक है, सर्वत्रव्यापी है। वह कर्मों के उदय-विलय तक ही सीमित नहीं है, वह कर्मातीत भी है। जीव में जीवत्व है। किसी जीव में मोक्ष-प्राप्ति की अर्हता है, वह भव्य है। किसी जीव में वह अर्हता नहीं है, वह अभव्य है। जीवत्व, भव्यत्व और अभव्यत्व ये तीनों पारिणामिक भाव हैं। उनका कर्मों के उदय अथवा विलय के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। कर्मों को बांधा और तोड़ा जा सकता है, किन्तु जीवत्व आदि को पुरुषार्थ के द्वारा न प्राप्त किया जा सकता है और न नष्ट किया जा सकता है। यह एक स्वाभाविक स्थिति है, अनादि पारिणामिक भाव है। धर्मास्तिकाय आदि छहों द्रव्य अनादि पारिणामिक भाव हैं। उनका पर्याय परिवर्तन सादि पारिणामिक भाव है।

मोह कर्म का उदय आत्म-पतन का और उसका क्षयोपशम, उपशम, क्षय आत्मोन्नयन का हेतु बनता है। कहा भी गया है-'**ऊजला नें मेला कह्या जोग, मोहकर्म संजोग विजोग**' मोहकर्म का साहचर्य पाकर जीव की प्रकृति अशुभ और उसके दूर रहने पर शुभ बनती है।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री मघराजजी युग

मुनिश्री चुन्नीलालजी (सरदारशहर) दीक्षा क्रमांक 281

मुनिश्री तेरापंथ धर्मसंघ में उच्चकोटि के साधक एवं महान तपस्वी थे। आपने विशाल एवं घोरतम तपश्चर्या द्वारा अपनी आत्मा को तेजस्वी बनाया तथा भिक्षु-शासन की गरिमा बढ़ाते हुए तीन कीर्तिमान स्थापित किये। उनके तप का विश्लेषण इस प्रकार है-

1. सं 1943 से एकांतर तप चालू किया, जो 6 वर्ष तक चला।

2. सं 1947 में प्रतर तप चालू किया और 1948 में पूर्ण किया। उसमें 5 पंचोले, 5 चोले, 5 तेले, 5 बेले, 5 उपवास होते हैं। 75 दिन का तप 25 दिन पारणा।

1	2	3	4	5
3	4	5	1	2
5	1	2	3	4
2	3	4	5	1
4	5	1	2	3

3. प्रथम कीर्तिमान- सं 1949 से आजीवन बेले-बेले तप स्वीकार किया। जिसका क्रम 23 वर्षों (लगभग) तक चला। 23 वर्ष बेले-बेले तप करने का पहला कीर्तिमान।

4. सं 1971 से तेले-तेले तप प्रारंभ किया। जो साढ़े तीन वर्ष चला। लघुसिंह निष्क्रीडित तप की तीन परिपाटियां-
क - प्रथम परिपाटी मघवागणी के सान्निध्य में सं 1948 से शुरू की जो 1949 में सम्पन्न हुई। इससे पहले साधु-साध्वी समाज में यह तप नहीं हुआ था। मुनिश्री ने सर्वप्रथम किया। यह दूसरा कीर्तिमान है।
ख - दूसरी परिपाटी सं 1970 में की
ग - तीसरी परिपाटी सं 1974 में चालू की जो 1975 को पूर्ण हुई। चतुर्विध तीर्थ में तीन परिपाटियां पूर्ण करके मुनिश्री ने नया उदाहरण प्रस्तुत किया। यह तीसरा कीर्तिमान है।

5. लघु सिंह निष्क्रीडित तप
यह तप सिंह की चाल से उपमित है। सिंह दो कदम आगे बढ़ता है फिर एक कदम पीछे रखता है। इसी प्रकार इस तप की आराधना होती है। इस तप में कम से कम उपवास और अधिक से अधिक नव उपवास किया जाता है। उनका क्रम यह है-
उपवास के पारणे पर बेला, बेला के पारणे पर उपवास। उसके पारणे पर तेला एवं तेले के पारणे पर बेला। इस प्रकार 9 दिन के उपवास तक चढ़ा जाता है और उसी क्रम से वापस उतरा जाता है। इस तप की एक परिपाटी में 6 मास 7 दिन लगते है जिसमें 154 दिन का तप होता है और 33 दिन पारणे के होते है। इस तप की चार परिपाटियां (आवृति) होती है। चारों आवृत्तियों का क्रम यही है, केवल पारणे में अन्तर आता है।
पहली परिपाटी के पारणे में साधक सर्वविगय ले सकता है। दूसरी परिपाटी के पारणे में साधक विगय नहीं लेता। तीसरी परिपाटी के पारणे में साधक लेप लगने वाली वस्तु का वर्जन करता है। चौथी परिपाटी में साधक आयंबिल करता है। इस प्रकार चार आवृत्तियां 2 वर्ष 28 दिन में पूर्ण होती है। इस तप की आराधना महासती महाकाली ने की थी।

6. समग्र तप की सूची
उपवास/900, 2/36, 3/36, 4/44, 5/25, 6/3, 7/2, 8/1, 9/1, 10/3, 11/2, 12/1, 13/1, 14/1, 15/1, 16/1, 17/1, 18/1, मुनिश्री 34 वर्ष 10 महीने लगभग साधुपर्याय में रहे। उसमें साधिक 22 साल की तपस्या हुई। तपस्या के कुल दिन 8000 लगभग होते है, ऐसा ख्यात में लिखा है।

- साभार: शासन समुद्र -

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
27 जनवरी- 02 फरवरी, 2025

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा अभिनव सामायिक फेस्टिवल का आयोजन

अभातेयुप के सेवा, संस्कार और संगठन के त्रि-आयामी कार्यक्रमों के अंतर्गत प्रतिवर्ष की भांति अंग्रेजी नव वर्ष 2025 रविवार को 'अभिनव सामायिक फेस्टिवल' का आयोजन किया गया। परम पूज्य युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के आशीर्वाद से 'उत्सव विश्व मैत्री का' के उद्देश्य के साथ समाज में आध्यात्मिक चेतना को प्रबल बनाने हेतु शाखा परिषदों द्वारा यह आयोजन किया गया। देश भर में विराजमान चारित्रात्माओं के सान्निध्य एवं उनकी अनुपस्थिति में उपासक-उपासिकाओं के निर्देशन में अभिनव सामयिक का क्रम सम्पादित किया गया। आत्मशुद्धि और मानसिक शांति के माध्यम सामायिक के महत्त्व को समझाते हुए श्रावक-श्राविकाओं को इसे उनके जीवन का अभिन्न अंग बनाने का प्रेरणादायी प्रयास किया गया। अभिनव सामायिक फेस्टिवल के अंतर्गत अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद की शाखाओं ने देशभर में इस कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें हजारों श्रावक-श्राविकाओं ने सामूहिक रूप से सामायिक का लाभ लिया। कार्यक्रम की सफलता में सामायिक साधक प्रभारी राकेश तक, सह प्रभारी दीपक श्रीमाल, विभिन्न राज्य प्रभारी एवं शाखा परिषदों का विशेष योगदान रहा। प्राप्त जानकारी के अनुसार, निम्न परिषदों ने अभिनव सामायिक का सफलतापूर्वक आयोजन किया :-

क्रमांक	राज्य	परिषद्	सान्निध्य/निर्देशन
1	आंध्र प्रदेश	राजमुंदरी	
2	असम	बरपेटा रोड	उपासक अनिल बैंगानी
3	असम	धुबरी	
4	असम	गुवाहाटी	उपासक अशोक सुराना
5	असम	करीमगंज	
6	असम	कोकराझार	उपासक रवि छाजेड़
7	असम	कृष्णाई	
8	असम	नौगांव	उपासिका सरलादेवी गुजरानी
9	असम	सिलचर	
10	बिहार	फारबिसगंज	उपासिका प्रभा सेठिया, सुधा बोथरा
11	बिहार	गुलाबबाग	उपासिका संतोषदेवी श्रीमाल
12	बिहार	कटिहार	
13	बिहार	किशनगंज	मुनि आनंद कुमारजी 'कालू'
14	छत्तीसगढ	अम्बिकापुर	
15	छत्तीसगढ	दुर्ग भिलाई	
16	छत्तीसगढ	जगदलपुर	उपासिका भारती लोढ़ा
17	छत्तीसगढ	रायपुर	उपासिका ज्योति डागा, सरोज कोठारी
18	दिल्ली	गांधीनगर दिल्ली	समणी जिनप्रज्ञा जी
19	गुजरात	अहमदाबाद	शासनश्री' साध्वी रामकुमारीजी
20	गुजरात	अहमदाबाद	मुनि उदित कुमारजी
21	गुजरात	अहमदाबाद	मुनि धर्मरुचिजी, डॉ. मुनि मदनकुमारजी
22	गुजरात	अमराईवाडी ओढ़व	उपासिका संगीतादेवी सिंघवी
23	गुजरात	बारडोली	उपासक पारसमल बाफना
24	गुजरात	भुज-कच्छ	मुनि अनंतकुमारजी
25	गुजरात	चलथान	
26	गुजरात	डुंगरी	
27	गुजरात	लिम्बायत	
28	गुजरात	पर्वत पाटिया	मुनि कोमलकुमार जी
29	गुजरात	सूरत	शासनश्री' साध्वी चंदनबालाजी, 'शासनश्री' साध्वी मधुबाला जी, साध्वी प्रज्ञाश्रीजी
30	गुजरात	उधना	साध्वी जिनप्रभाजी
31	गुजरात	वडोदरा	साध्वी पुण्यप्रभाजी
32	हरियाणा	फरीदाबाद	उपासिका मंजू लूनिया व सुशीला दुगड़
33	हरियाणा	फतेहाबाद	
34	हरियाणा	जींद	उपासिका कांता मित्तल
35	हरियाणा	सिरसा	साध्वी संयमप्रभाजी
36	झारखंड	चास बोकारो	
37	झारखंड	जमशेदपुर	
38	कर्नाटक	गांधीनगर बैंगलोर	साध्वी उदितयशाजी
39	कर्नाटक	हासन	साध्वी संयमलताजी
40	कर्नाटक	हनुमंतनगर	साध्वी सिद्धप्रभाजी
41	कर्नाटक	कोप्पल	उपासिका पुष्पा चोपड़ा एवं कमला पालगोता
42	कर्नाटक	मंड्या	मुनि मोहजीत कुमार जी
43	कर्नाटक	मैसूर	उपासक राजेश आच्छा
44	कर्नाटक	राजाजीनगर	उपासक भंवरलाल मांडोत
45	कर्नाटक	टी.दासहल्ली	उपासिका सरोज छाजेड़
46	कर्नाटक	विजयनगर	साध्वी सिद्धप्रभाजी
47	कर्नाटक	यशवंतपुर	उपासक राजमल बोहरा
48	मध्य प्रदेश	इदौर	मुनि अभिजीत कुमार जी
49	मध्य प्रदेश	पेटलावद	
50	महाराष्ट्र	अंधेरी, मुंबई	
51	महाराष्ट्र	बांद्रा, मुंबई	
52	महाराष्ट्र	भिवंडी, मुंबई	
53	महाराष्ट्र	भुसावल	समणी कमलप्रज्ञाजी
54	महाराष्ट्र	बोईसर, मुंबई	उपासिका कांता सोलंकी
55	महाराष्ट्र	बोरीवली, मुंबई	
56	महाराष्ट्र	चेम्बूर, मुंबई	उपासक राहुल डांगी
57	महाराष्ट्र	दादर, मुंबई	शासनश्री' साध्वी विद्यावतीजी
58	महाराष्ट्र	दक्षिण मुंबई	साध्वी प्रोफेसर मंगलप्रज्ञाजी
59	महाराष्ट्र	डोम्बिवली, मुंबई	उपासिका किरण कोठारी, सुधा सियाल, कुसुम बडाला
60	महाराष्ट्र	गोरेगांव, मुंबई	उपासक रमेश सिंघवी
61	महाराष्ट्र	गोवंडी, मुंबई	
62	महाराष्ट्र	जळगांव	
63	महाराष्ट्र	जालना	उपासक पवन सेठिया
64	महाराष्ट्र	कांदिवलीए मुंबई	उपासक पारसमल दूगड़
65	महाराष्ट्र	खारघर, मुंबई	उपासक संजय हिरण
66	महाराष्ट्र	कोपरी ठाणे, मुम्बई	
67	महाराष्ट्र	कुर्ला, मुम्बई	
68	महाराष्ट्र	मुंब्रा, मुंबई	
69	महाराष्ट्र	नागपुर	
70	महाराष्ट्र	नालासोपारा, मुम्बई	उपासिका मंजू बाफना, लक्ष्मी मेहता
71	महाराष्ट्र	रत्नागिरि	
72	महाराष्ट्र	सांताक्रूज, मुंबई	उपासक कन्हैयालाल कोठारी
73	महाराष्ट्र	ठाणे, मुम्बई	उपासक अशोक इटोदिया
74	महाराष्ट्र	वसई रोड, मुम्बई	उपासक भगवतीलाल चौहान
75	महाराष्ट्र	विरार मुंबई	
76	ओडिशा	बेलपाड़ा	
77	ओडिशा	भुवनेश्वर	
78	ओडिशा	कांटाबांजी	
79	ओडिशा	केसिंगा	उपासक लछमन लाल जैन
80	पंजाब	बरेटा मंडी	
81	पंजाब	भीखी	साध्वी प्रतिभाश्रीजी
82	पंजाब	धुरी	
83	पंजाब	मानसा	
84	पंजाब	संगरूर	
85	पंजाब	शेरपुर	
86	पंजाब	सुनाम	शासनश्री' साध्वी कनकश्रीजी
87	पश्चिम बंगाल	दलखोला	उपासिका वन्दना बैद
88	पश्चिम बंगाल	लिलुआ	उपासक अरुण नाहटा
89	पश्चिम बंगाल	लिलुआ	उपासक राकेश राखेचा
90	पश्चिम बंगाल	पूर्वांचल कोलकाता	मुनि जिनेश कुमार जी
91	पश्चिम बंगाल	साउथ हावड़ा	मुनि जिनेश कुमार जी
92	राजस्थान	अकोला	
93	राजस्थान	आसींद	साध्वी जसवती जी
94	राजस्थान	बालोतरा	मुनि यशवंत कुमार जी
95	राजस्थान	भीम	
96	राजस्थान	भीलवाड़ा	
97	राजस्थान	बीदासर	साध्वी कार्तिकयशा जी
98	राजस्थान	बीकानेर	शासनश्री' साध्वी मंजूप्रभाजी
99	राजस्थान	चाड़वास	मुनि जम्बू कुमार जी
100	राजस्थान	चित्तौड़गढ़	उपासक कमल जैन
101	राजस्थान	दौलतगढ़	
102	राजस्थान	देवगढ़	उपासिका रेखा आच्छा
103	राजस्थान	गंगापुर	
104	राजस्थान	गंगाशहर	साध्वी चरितार्थप्रभा जी एवं साध्वी प्रांजलप्रभा जी
105	राजस्थान	हनुमानगढ़ टाउन	उपासक महेश जैन
106	राजस्थान	जयपुर	साध्वी मंगलप्रभा जी
107	राजस्थान	जयपुर	साध्वी अणिमाश्री जी
108	राजस्थान	जयपुर	'शासनश्री' साध्वी मधुरेखा जी
109	राजस्थान	जयपुर	'शासन गौरव' साध्वी कनकश्रीजी
110	राजस्थान	जयपुर	मुनि तत्त्वरुचि जी 'तरुण'
111	राजस्थान	जसोल	साध्वी रतिप्रभा जी
112	राजस्थान	कालू	मुनि देवेन्द्र कुमार जी
113	राजस्थान	कांकरोली	मुनि संजय कुमार जी, मुनि प्रसन्न कुमार जी
114	राजस्थान	केलवा	उपासक देवीलाल कोठारी
115	राजस्थान	पाली	उपासक हेमराज सुंदेचा
116	राजस्थान	पीलीबंगा	साध्वी बसंतप्रभा जी
117	राजस्थान	सादुलपुर	साध्वी विद्यावती जी
118	राजस्थान	सरदारपुरा जोधपुर	साध्वी प्रमोदश्रीजी
119	राजस्थान	श्रीडूंगरगढ़	शासनश्री' साध्वी कुंथुश्रीजी
120	राजस्थान	श्रीडूंगरगढ़	
121	राजस्थान	सूरतगढ़	साध्वी प्रज्ञावती जी
122	तमिलनाडु	चेन्नई	समणी संचितप्रज्ञाजी
123	तमिलनाडु	गुडियात्तम	
124	तमिलनाडु	मदुरई	उपासक धनराज लोढ़ा
125	तमिलनाडु	तिरुप्पुर	उपासिका संजू दुगड़, उषा डागा, मधु कोठारी, संतोष आंचलिया
126	तेलंगाना	हैदराबाद	उपासिका श्वेता बोथरा
127	तेलंगाना	हैदराबाद	
128	तेलंगाना	हैदराबाद	उपासिका चंद्रा देवी सुराणा, रीता सुराणा, मंजू दुगड़

गुरु और संघ सेवा ही है हमारा परम कर्त्तव्य

कालबादेवी।

तेरापंथ भवन में मुनि डॉ. आलोक कुमार जी और साध्वी प्रोफेसर मंगलप्रज्ञा जी आध्यात्मिक मिलन हुआ। इस अवसर पर मुनि आलोक कुमार जी ने प्रमोदभाव व्यक्त करते हुए कहा आज महामार्ग पर चलने वाले पथिकों का मिलन हुआ है।

ज्ञान सम्पन्न और विशिष्ट स्थान प्राप्त साध्वी मंगलप्रज्ञा जी से मिलकर हमें प्रसन्नता है। समण श्रेणी के दौरान जब आप समणी मंगलप्रज्ञाजी के रूप में जब विदेश यात्रा कर गुरु दर्शन करते तब आचार्य श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी बहुत प्रसन्न होते। इनका वक्तव्य हमेशा ज्ञानवर्धक और वैशिष्ट्यपूर्ण रहा है। दक्षिण यात्रा सम्पन्नता पर पिंपड़ी चिंचवड़ के गुरु दर्शन की चर्चा करते हुए मुनिश्री ने कहा - उस विशेष वक्तव्य का श्रोता और गुरुकृपा का मैं भी साक्षी बना।

मुनिश्री ने आगे कहा - साध्वी मंगलप्रज्ञाजी की श्रुत सेवा भी विलक्षण है। इनके शोध परक साहित्य का मैं भी पाठक रहा हूं। आगम के अंतस्तोष में आपका नामोल्लेख हुआ है। आपका सम्पादन कौशल, लेखन कला अनमोल और बेजोड़ है, जो सैंकड़ों वर्षों तक उपयोगी रहेंगे। महावीर के अनेकान्त दर्शनानुसार दीक्षा पर्याय से हम दोनों मुनि ज्येष्ठ हैं, पर ज्ञान और अनुभव दृष्टि से आप बड़े हैं। आज आध्यात्मिक भाई-बहन का मिलन हुआ है। हमें गुरु निर्देशानुसार गुजरात की ओर प्रस्थान करना है। संघ सेवा और गुरु आज्ञा ही हमारे लिए सर्वोपरि है।

साध्वी प्रो. मंगलप्रज्ञा जी ने मुनिवृन्द का अभिवादन करते हुए कहा - मुनि आलोक कुमार जी स्वामी एक सेवाभावी, धीर, गंभीर व्यक्तित्व के धनी हैं। गुरुदेव श्री तुलसी ने दीक्षित किया, 'शासन गौरव' मुनि मधुकर जी स्वामी को सौंपा। गुरुकुलवास में वर्षों तक रहे। अब बहिर्विहार में गहन पुरूषार्थ, ज्ञान, चिन्तन के द्वारा यात्राएं करवा रहे हैं। गण प्रभावक संत के रूप में प्रख्यात हैं। 'शासन गौरव' मुनि मधुकर जी स्वामी की शारीरिक और मानसिक विशिष्ट सेवा की है, वह उल्लेखनीय और अनुकरणीय है। आपके औदार्य, माधुर्य विचारों और पौरुषमय व्यक्तित्व का मैं सम्मान करती हूं। साध्वीश्री जी ने कहा - हम गण गरिमा बढ़ाने हेतु सदैव प्रयत्न करते रहें। मुनि हिमकुमार जी प्रगति पथ पर निरन्तर बढ़ते रहें। मुनिश्री एवं साध्वीश्री ने कहा तेरापंथ का श्रावक समाज भी जागरूक है। इनकी धर्म चेतना सदैव जागृत रहे। संघ और संघपति की सेवा करते रहें। इस अवसर पर साध्वी वृंद ने अपनी भावनाएं सामूहिक संगान से व्यक्त की। तेरापंथ सभा अध्यक्ष सुरेश डागलिया, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष गिरीश सिसोदिया एवं महिला मंडल अध्यक्ष विनीता धाकड़ ने भी भावनाएं व्यक्त की।

धर्म से ही संभव है सुख-शांति की प्राप्ति

आदर्श नगर, सवाई माधोपुर।

धर्म इहलोक व परलोक में शांति देने वाला है। धर्म को केवल धर्मस्थान तक सीमित करना अनुचित है। धार्मिक व अधार्मिक व्यक्ति के मध्य अंतर नजर आना भी अपेक्षित है।

उक्त विचार आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या समणी निर्देशिका भावितप्रज्ञाजी ने आदर्शनगर स्थित अणुव्रत भवन में आयोजित मंगल भावना समारोह में व्यक्त किए। उन्होंने प्रवास के अंतिम उपदेश के रूप में श्रावक-श्राविकाओं को उदारता पूर्वक मुस्कराने, किसी की निंदा व आत्मप्रशंसा से बचने, अनावश्यक बोलने में कंजूसी करने, सोच को सकारात्मक बनाए रखने, बड़ों के प्रति विनम्र भाव रखने, हर कार्य में करुणा भाव रखने व स्वभाव को स्नेहासिक्त बनाए रखने की प्रेरणा दी।

इससे पूर्व समणीवृंद के 115 दिवसीय प्रवास की परिसंपन्नता पर आयोजित मंगल भावना समारोह समणीजी के मंगल मंत्र उच्चारण से प्रारंभ हुआ।

समणी मुकुलप्रज्ञा जी ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। समणी संघप्रज्ञाजी ने प्रवासकाल की संपूर्ण जानकारी गीतिका के माध्यम से प्रस्तुत की। समारोह में अध्यक्ष कमलेश जैन, पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी रामेश्वर प्रसाद जैन, राधेश्याम जैन, विमल कुमार जैन, नम्रता जैन इंदौर, चंदा जैन, मंत्री सपना जैन, व्याख्याता अनीता जैन, पुलकित जैन आदि ने अपने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

तेरापंथ महिला मंडल की रश्मि जैन, सीमा जैन, सुमिता जैन, सपना जैन व मीनाक्षी जैन ने नाटिका की सुंदर प्रस्तुति दी। महिला मंडल की ग्यारह बहिनों ने सुमधुर मंगल भावना गीत प्रस्तुत किया।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के मंत्री नरेंद्र कुमार जैन ने आभार ज्ञापित किया। उपासक चन्द्रप्रकाश जैन ने कार्यक्रम का संचालन किया।

जीवन विज्ञान कार्यशाला का हुआ आयोजन

कटक।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में जीवन विज्ञान प्रकल्प के अन्तर्गत अणुव्रत समिति कटक द्वारा 'जानें जीवन विज्ञान' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में राष्ट्रीय प्रशिक्षण प्रभारी जीवन विज्ञान मास्टर ट्रेनर राकेश खटेड़ (चेन्नई) मुख्य वक्ता रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ उपासिका समता सेठिया द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुआ। मंगलाचरण की प्रस्तुति पूजा चोरड़िया ने दी। स्वागत भाषण एवं अतिथियों का परिचय समिति के अध्यक्ष मुकेश डूंगरवाल ने किया। राकेश खटेड़ ने जीवन विज्ञान के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यह जीवन के विकास और संतुलित जीवनशैली में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

कार्यक्रम का कुशल संचालन निहारिका सिंघी ने किया। कार्यशाला के समायोजन में केंद्रीय टीम का विशेष सहयोग रहा। आभार ज्ञापन मंत्री ममता दूधोड़िया द्वारा किया गया।

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर
कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा
8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

संवाद जैन तेरापंथ न्यूज से

चौविहार संथारा परिसम्पन्न

रायपुर। तारानगर निवासी रायपुर-कोलकाता प्रवासी संथारा साधिका किरण देवी बोथरा धर्म सहायिका स्व. माणिक चंद जी बोथरा का चौविहार संथारा दिनांक 21 जनवरी 2024 को रात्रि 12:05 बजे सीज गया है। ज्ञातव्य है कि आपको आचार्य श्री महाश्रमण जी की आज्ञा से समणी निर्देशिका विपुलप्रज्ञा जी एवं समणी आदर्शप्रज्ञा जी द्वारा दिनांक 07 जनवरी 2025 को तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान सायं 7:11 बजे रायपुर में करवाया गया। तत्पश्चात सोमवार दिनांक 20 जनवरी 2025 को रात्रि 10:04 बजे उन्हें परिवारिक जनों द्वारा चौविहार संथारे का पच्चक्खाण कराया गया था। संथारा सीजने के पश्चात उनका नेत्रदान भी करवाया गया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
27 जनवरी- 02 फरवरी, 2025

विश्व मैत्री के लक्ष्य के साथ अभातेयुप के तत्वावधान में देश भर में एक साथ, एक समय हुई नव वर्ष के प्रथम रविवार को अभिनव सामायिक साधना

लिलुआ

अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद, लिलुआ ने विश्व मैत्री का उत्सव अभिनव सामायिक का आयोजन स्थानीय तेरापंथ सभा भवन, बेलूड़ में किया। उपासक अरुण नाहटा ने सामायिक का संकल्प करवाया। अभिनव सामायिक के अंतर्गत ध्यान का प्रयोग और स्वाध्याय कराते हुए सामायिक की जानकारी दी और ध्यान के महत्व को समझाते हुए कहा कि ध्यान एक क्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने मन को चेतना की एक विशेष अवस्था में लाने का प्रयत्न करता है। इस आध्यात्मिक साधना में बेलूड़–बाली सभा से अध्यक्ष विवेक दुगड़ और उनकी टीम, महिला मंडल बेलूड़–बाली की अध्यक्षा कनक देवी डाकलिया और उनकी टीम, तेयुप लिलुआ सदस्य एवं सकल श्रावक समाज ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। अभिनव सामायिक संयोजक हेमंत दुगड़ और कनक देवी डाकलिया का सराहनीय श्रम रहा। आभार ज्ञापन तेयुप लिलुआ के निवर्तमान अध्यक्ष संदीप दुधेड़िया ने किया।

इचलकरंजी

तेरापंथ युवक परिषद, इचलकरंजी द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में अभिनव सामायिक फेस्टिवल के अंतर्गत लगभग 50 सामायिक की गई। अभिनव सामायिक का प्रयोग जैन संस्कारक विकास सुराणा द्वारा बहुत ही सुंदर ढंग से कराया गया। संयोजक तेयुप कोषाध्यक्ष मुदित बाफना का श्रम नियोजित हुआ। अंत में आभार ज्ञापन मंत्री अंकुश बाफना ने किया।

पूर्वांचल-कोलकाता

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप पूर्वांचल कोलकाता द्वारा आयोजित एवं समस्त कोलकाता, हावड़ा एवं उपनगरीय तेयुप के संयुक्त सहयोग से मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में एवं अभातेयुप अभिनव सामयिक पश्चिम बंगाल प्रभारी नमन जम्मड़ की उपस्थिति में अभिनव सामायिक फेस्टिवल, वैदिक विलेज, कोलकाता के प्रांगण में आयोजित हुआ। जयसिंह डागा (सभा अध्यक्ष, साल्टलेक), नवीन सिंघी (अध्यक्ष तेयुप पूर्वांचल कोलकाता), गगनदीप बैद (अध्यक्ष तेयुप साउथ हावड़ा), अनुज बागरेचा (अध्यक्ष तेयुप टॉलीगंज), मोहित बैद (अध्यक्ष तेयुप साउथ कोलकाता), विनीत कोठारी (अध्यक्ष तेयुप उत्तर हावड़ा), स्थानीय संघीय संस्थाओं के पदाधिकारीयों एवं अभातेयुप सदस्यों सहित श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति रही।

मैसूर

अभातेयुप के तत्वावधान में अभिनव सामयिक फेस्टिवल का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद ट्रस्ट मैसूर द्वारा उपासक राजेश आच्छा के निर्देशन में तेरापंथ भवन मैसूर में हुआ।

जयपुर

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् जयपुर के द्वारा मुनि तत्त्वरुचि जी 'तरुण' के सान्निध्य में अभिनव सामायिक फेस्टिवल का आयोजन भिक्षु साधना केंद्र श्याम नगर में किया गया। कार्यक्रम में लगभग 85 सामायिक की गई। मुनिश्री बताया कि सामायिक करने से तनाव से मुक्ति एवं पूर्ण शांति मिलती है तथा आध्यात्मिक क्रिया की ओर रुझान बढ़ता है। कार्यक्रम में युवक रत्न राजेन्द्र सेठिया, तेयुप जयपुर के पूर्व अध्यक्ष राजेन्द्र बांठिया, मंत्री अभिषेक भंसाली, कार्यसमिति सदस्य सहित अन्य गणमान्य महानुभाव की उपस्थित रही। कार्यक्रम की संयोजना में संयोजक चांद संकलेचा का श्रम उल्लेखनीय रहा।

'शासन गौरव' साध्वी कनकश्री जी ठाणा-6 के सान्निध्य में अभिनव सामायिक फेस्टिवल का आयोजन अणुविभा जयपुर केन्द्र में किया गया। कार्यक्रम में लगभग 35 सामायिक की गई। साध्वीश्री ने कहा कि साधना के क्षेत्र में सर्वाधिक मूल्य किसी का है तो वो है 'समता' और 'समता की साधना' का सर्वोत्तम मार्ग सामायिक है। कार्यक्रम में तेयुप जयपुर के उपाध्यक्ष प्रवीण जैन, कार्यसमिति सदस्य सहित अन्य गणमान्य महानुभावों की उपस्थित रही। कार्यक्रम की संयोजना में संयोजक अंकित जैन का श्रम उल्लेखनीय रहा।

'शासनश्री' साध्वी मधुरेखा जी ठाणा-5 के सान्निध्य में अभिनव सामायिक फेस्टिवल का आयोजन टैगोर नगर में किया गया। साध्वी श्री ने कहा कि सामायिक मन को स्थिर करने का सर्वोत्तम माध्यम है।कार्यक्रम में लगभग 100 सामायिक की गई। कार्यक्रम में तेयुप जयपुर के पूर्व अध्यक्ष संजीव कोठारी, कार्यसमति सदस्य सहित अन्य गणमान्य महानुभावों की उपस्थित रही। कार्यक्रम की संयोजना में संयोजक अरिहंत नाहर का श्रम उल्लेखनीय रहा।

साध्वी मंगलप्रभा जी ठाणा-4 के सान्निध्य में अभिनव सामायिक फेस्टिवल का आयोजन तेरापंथ भवन विद्याधर नगर में किया गया। साध्वीश्री ने बताया कि जप, ध्यान, स्वाध्याय, त्रिगुप्ति की साधना को सामायिक के रूप में जाना जाता है। कार्यक्रम में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा जयपुर के अध्यक्ष शांतिलाल गोलछा, अभातेयुप कार्यसमिति सदस्य श्रेयांष बैंगानी, तेयुप जयपुर कोषाध्यक्ष मोहित गधैया, कार्यमिति सदस्य सहित अन्य गणमान्य महानुभावों की उपस्थित रही। कार्यक्रम की संयोजना में संयोजक जयंत भूरा का श्रम उल्लेखनीय रहा। कार्यक्रम में लगभग 20 सामायिक हुई।

साध्वी अणिमाश्री जी ठाणा-5 के सान्निध्य में अभिनव सामायिक फेस्टिवल का आयोजन टैगोर नगर में किया गया। कार्यक्रम में लगभग 60 सामायिक की गई। साध्वीश्री ने कहा कि चित्त की एकाग्रता बढ़ाने के लिए सामायिक आत्म चिन्तन का सर्वोत्तम साधन है। सामायिक के माध्यम से हम परिपक्व अवस्था जैसी गंभीरता का अनुभव कर सकते है। कार्यक्रम में तेयुप जयपुर के प्रबुद्ध विचारक सुरेन्द्र सेठिया, राजेश छाजेड़ सहित गणमान्य महानुभावों की उपस्थित रही। संयोजना में संयोजक अंकित बरड़िया का श्रम उल्लेखनीय रहा।

मदुरै

तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में स्थानीय तेरापंथ भवन में अभिनव सामायिक के तहत लगभग 30 सामायिक कर 2025 नव वर्ष का पहला कार्यक्रम मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र से हुई। उपासक धनराज लोढ़ा ने अभिनव सामायिक के अन्तर्गत जप, ध्यान का प्रयोग और स्वाध्याय कराते हुए अभिनव सामायिक की पूर्ण जानकारी दी। तेयुप मदुरै अध्यक्ष विशाल घीया ने सभी का स्वागत किया। सभा अध्यक्ष गौतमचंद गोलेछा एवं कन्या मंडल प्रभारी दीपिका फूलफगर ने नव वर्ष पर तिरुकुलीकुंडरम में मुनि हिमांशुकुमार जी ठाणा 2 के दर्शन की जानकारी दी। सभा निवर्तमान अध्यक्ष अशोक जीरावला ने विचार रखे। मंत्री ऋषभ नाहटा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

हैदराबाद

तेयुप, हैदराबाद द्वारा जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद, तेरापंथ महिला मंडल व तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के संयुक्त आयोजन में तेरापंथ भवन सिकंदराबाद और झूमरमल सुराना भवन, मलकपेट में अभिनव सामायिक फेस्टिवल के तहत सामूहिक सामायिक कर नववर्ष की सफल शुरुआत की गई। अभिनव सामायिक के प्रयोग उपासिका बहनों चंद्रा सुराना, मंजु दुगड़ और रीटा सुराना द्वारा करवाया गया। अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा ने समागत सभी व्यक्तियों का स्वागत करते हुए नववर्ष की मंगल शुभकामनाएँ दी। अभातेयुप TTF प्रभारी मनीष जैन की गरिमामय उपस्थिति रही। इस कार्यक्रम के संयोजक राहुल गोलछा का सराहनीय श्रम रहा। तेयुप मंत्री अनिल दुगड़ ने बताया कि ज्ञानशाला परिवार का भी इस आयोजन में अति महत्वपूर्ण सहयोग रहा, जिसमें क्षेत्रीय संयोजिका संगीता गोलछा की विशेष भूमिका रही। अभिनव सामयिक फेस्टिवल का आयोजन श्रीनगर कॉलोनी, बोवेनपल्ली, सुचित्रा, हाईटेक सिटी, अमीरपेट, कबाड़ीगुड़ा, डीवी कॉलोनी इत्यादि अनेक ज्ञानशालाओं में किया गया। त्रयनगर में कुल 21 स्थानों पर 450 से अधिक व्यक्तियों ने इस कार्यक्रम में सहभागिता दी।

गुवाहाटी

अभातेयुप द्वारा निर्देशित एवं तेरापंथ युवक परिषद् गुवाहाटी द्वारा आयोजित 'अभिनव सामायिक फेस्टिवल-उत्सव विश्व मैत्री का' स्थानीय तेरापंथ धर्मस्थल में आयोजित किया गया। उपासक अशोक सुराणा ने अभिनव सामायिक का महत्व बताते हुए जप, ध्यान, स्वाध्याय और अंत में त्रिगुप्ति साधना के साथ अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाया। इस अवसर पर लगभग 75 श्रावक-श्राविकाओं ने सामायिक की। तेयुप मंत्री पंकज सेठिया ने आभार ज्ञापन किया गया।

निर्माण : एक कदम विकास की ओर अग्रसर

चेम्बूर, मुंबई। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वाधान में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ महिला मंडल चेंबूर द्वारा 'निर्माण : एक कदम विकास की ओर' आयाम के तहत विद्यालय संरक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसके तहत आर.एच. काते इंग्लिश स्कूल को चेंबूर महिला मंडल द्वारा वॉटर प्यूरीफायर की सुविधा प्रदान की गई। वॉटर प्यूरीफायर के उद्घाटन के कार्यक्रम में चेंबूर के एम.एल.ए. तुकाराम काते, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के कोषाध्यक्ष नरेश सोनी तथा कार्यसमिति सदस्य प्रशांत तातेड़ की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा के अध्यक्ष रमेश धोका तथा उनकी टीम, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष हुकुम सांखला तथा उनकी टीम की सराहनीय उपस्थिति रही। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र द्वारा की गई। तत्पश्चात तुकाराम काते द्वारा वॉटर प्यूरीफायर का उद्घाटन किया गया। तुकाराम काते ने तेरापंथ महिला मंडल के कार्यों की प्रशंसा की तथा उनके कार्यों को सराहा। इस अवसर पर चेंबूर महिला मंडल की बहनों तथा अन्य सदस्यों सहित लगभग 30 सदस्यों की सराहनीय उपस्थिति रही।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

सूरतगढ़। 'शासनश्री' साध्वी बसंतप्रभा जी एवं साध्वी प्रज्ञावती जी का आध्यात्मिक मिलन तेरापंथ भवन सूरतगढ में हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मण्डल के मंगलाचरण के साथ हुई। तेयुप सदस्यों ने भी अपने भाव गीतिका के माध्यम से प्रस्तुत किए। 'शासनश्री' साध्वीश्री बसंतप्रभा जी एवं साध्वी प्रज्ञावतीजी ने परस्पर प्रमोद भाव व्यक्त किए। साध्वी संकल्पश्रीजी, साध्वी कल्पमाला जी, साध्वी रोहितयशा जी, साध्वी कीर्तिप्रभा जी, साध्वी मयंकयशा जी व साध्वी प्रशांतयशा जी ने गीतिका व वक्तव्य के माध्यम से अपने भाव रखे। सभा के मंत्री जयप्रकाश जैन, महिला मंडल की अध्यक्षा मंजू रांका व मंत्री नेहा बैद ने अपने विचार व्यक्त किये। मंच संचालन अमृत चोपड़ा ने किया।

संक्षिप्त खबर

श्री उत्सव में एटीडीसी द्वारा स्वास्थ्य जांच

बेंगलुरु। तेरापंथ युवक परिषद्, बेंगलुरु (गांधीनगर) द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर और डेंटल केयर द्वारा तेरापंथ महिला मंडल द्वारा आयोजित दो दिवसीय श्री उत्सव के दौरान विशेष स्टॉल लगाकर स्वास्थ्य जांच की गई। डायग्नोस्टिक सेंटर ने निःशुल्क और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाई। इस अवसर पर प्रायोजक कमलेश-स्नेह डूंगरवाल (सुजानगढ़, बेंगलुरु) की मार्गदर्शन फाउंडेशन तथा तेरापंथ महिला मंडल को उनके विशेष सहयोग के लिए सम्मानित किया गया। शिविर संयोजक पंकज सुराणा ने इस आयोजन की सफलता के लिए योगदान दिया। वहीं, मंत्री राकेश चोरड़िया ने सभी संस्थाओं, पदाधिकारियों और सहयोगियों का आभार व्यक्त किया।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

नोखा। सन्तों, साध्वियों का मिलना आनन्ददायक होता है। जोरावरपुरा में 9 दिन प्रवास करके पुनः नोखा आगमन पर 'शासनगौरव' साध्वी राजीमतीजी से साध्वी विशदप्रज्ञा जी का मिलन दर्शनीय था। साध्वी राजीमतीजी ने कहा तेरापंथ की मर्यादा और अनुशासन की एक गूंज है। आचार्य श्री महाश्रमणजी की छत्र छाया में हम संयम साधना कर स्व-कल्याण करते हुए पर कल्याण कर रहे हैं। साध्वी विशदप्रज्ञाजी प्रबुद्ध एवं विनम्रता की प्रतिमूर्ति है। साध्वी विशदप्रज्ञाजी ने 'शासन गौरव' साध्वी राजीमती को विरल, विलक्षण एवं ध्यान योग साधिका बताया। कोलकता से समागत सुमधुर गायक लक्ष्मीपत जैन ने गीतिका की प्रस्तुति दी।

वास्तु एंड जैनिज्म विद फाइव एलिमेंट्स

अहमदाबाद। समणी डॉ. मंजूप्रज्ञाजी और समणी स्वर्णप्रज्ञाजी के सान्निध्य में स्काई सिटी, अहमदाबाद में 'वास्तु एंड जैनिज़्म विद फाइव एलिमेंट्स' विषय पर कार्यशाला का आयोजन हुआ। इसमें मुख्य वक्ता के रूप में विशाल बरड़िया की उपस्थिति थी। कार्यशाला में फाइव एलिमेंट्स के व्यक्ति के जीवन में उपयोगिता और भाव शुद्धि के द्वारा हर चीज को पवित्र और ऊर्जा संपन्न बनाने के तरीके पर चर्चा की गयी। इस कार्यक्रम को सुनियोजित बनाने में शैलेश मेहता, सुनीता मेहता, अनु गुलगुलिया, मनोज सेठिया, मनीष बुच्चा एवं मधु डागा का सहयोग रहा। 50 से अधिक लोगों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। बोपल ज्ञानशाला के बच्चों ने भी उत्साह से भाग लिया।

एक्युप्रेशर सुजोक शिविर का शुभारंभ

रतलाम (म.प्र)। तेरापंथ सभा रतलाम एवं तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के संयुक्त तत्वावधान में एक्युप्रेशर सुजोक शिविर का भव्य शुभारंभ हुआ। सर्वप्रथम शिविर संचालक नरेंद्र चौधरी और उनकी टीम का स्वागत तेरापंथ सभा मंत्री मनीष बरबेटा और TPF अध्यक्ष निपुण कोठारी ने किया। समाजसेवी मोहन पिरोदिया का स्वागत महिला मण्डल अध्यक्ष अनीता मांडोत और सभा सहमंत्री विकास भांगू एवं अर्पण कासवा ने किया। स्वागत वक्तव्य में TPF अध्यक्ष निपुण कोठारी ने शिविर में पधारे सभी समाजजन का स्वागत किया। शिविर संचालक नरेंद्र चौधरी ने शिविर से होने वाले लाभ की जानकारी दी। उक्त शिविर में समाज के गणमान्य व्यक्ति, विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी सहित समाजजन उपस्थित थे।

भगवान महावीर की दो धाराओं का आध्यात्मिक मिलन

साउथ तुकोगंज।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि डॉ. अभिजीत कुमार जी एवं मुनि जागृत कुमार जी का गुणायतन के प्रेरणास्रोत आचार्य श्री विद्यासागर जी के सुशिष्य मुनि 108 प्रमाण सागर जी महाराज के साथ आध्यात्मिक मिलन साउथ तुकोगंज स्थित चिन्मय संत निवास पर समाज जनों की उपस्थिति में हुआ। इस अवसर पर मुनि प्रमाण सागर जी ने कहा कि जैन धर्म को प्रज्वलित रखना है। अतः जैन धर्म को अपनी परिधि का विस्तार करना होगा। इसके लिए सभी जैन पंथों को यह सूत्र आत्मसात करना होगा। सबको अपनाएं, सबको अपना बनाएं तो ही हम जैन धर्म के अस्तित्व की सुरक्षा कर पाएंगे। आपने आगे कहा कि सन् 2013 में मेरा कलकत्ता चतुर्मास था एवं तेरापंथ धर्मसंघ की साध्वी अणिमाश्री जी का भी चतुर्मास कलकत्ता में था। उस समय मेरे प्रवचन के पश्चात एक अजैन व्यक्ति बैठा रहा। बातचीत के दौरान उसने बताया कि मैंने साध्वी अणिमाश्री जी से अणुव्रत के माध्यम से जैन धर्म को समझा है एवं मैं जैन धर्म का पालन करता हूं। मैं मांसाहारी था लेकिन अब मैं शाकाहारी हूं। मुनि प्रमाण सागर जी ने कहा कि अणुव्रत मानवता की बहुत बड़ी सेवा कर रहा है। मुनि डॉ.अभिजीत कुमार जी ने तेरापंथ धर्मसंघ से संबंधित मौलिक नियमों की चर्चा करते हुए कहा कि आचार्य श्री महाश्रमणजी का सद्भावना के प्रति रूझान रहा है। आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी एवं आचार्य श्री विद्यानंद जी, आचार्य श्री विद्यासागर जी ने सद्भावना के लिए बहुत काम करते हुए मानव जाति की बहुत बड़ी सेवा की है। आचार्य श्री महाश्रमणजी अहिंसा, सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति के अभियान के माध्यम से लगभग 58 हजार किलोमीटर की पैदल यात्रा कर चुके हैं। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष निर्मल नाहटा एंव सभा के मंत्री राकेश भंडारी, महिला मंडल की मंत्री मोना बम्बोरी, तेयुप अध्यक्ष अर्पित जैन, TPF अध्यक्ष चंद्रप्रकाश भटेरा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष मनीष कठोतिया एंव समाज के गणमान्य भाई-बहनों की उपस्थिति में मुनि प्रमाण सागरजी को साहित्य भेंट किया गया। दिगम्बर जैन समाज के वरिष्ठ श्रावकों द्वारा मुनि प्रमाणसागर जी द्वारा रचित साहित्य मुनिवृंद को प्रदान किया गया।

नववर्ष पर संजोये आध्यात्मिक संकल्प

मकराना।

नव वर्ष की मंगल प्रभात में प्रथम बार मकराना की धरा पर नववर्ष का वृहद् मंगलपाठ जन-जन के आकर्षण का केन्द्र बन रहा था।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी गुप्तिप्रभाजी के सान्निध्य में नववर्ष का कार्यक्रम आयोजित हुआ।

'कैसा हो हमारा जीवन' और कैसे संजोए संकल्प' विषयों पर प्रेरणा देते हुए साध्वीश्री ने कहा हमारे जीवन में 5 पी का होना महत्वपूर्ण है। 5 पी हैं - प्लेज़र, पोस्ट, प्रोस्पेरिटी, प्रॉपर्टी और पॉपुलर होना। परन्तु यदि जीवन में Peace और Purity नहीं है तो वह Punishment का कारण बन जाता है। साध्वी श्री ने उपशम की साधना पुष्ट हो इसलिए संपूर्ण जनमेदिनी को 'उवसमेण हणे कोहं' की प्रतिदिन 1 माला फेरने का संकल्प कराया।

'शिव संकल्प मस्तु मे मनः' की प्रेरणा देते हुए साध्वी कुसुमलताजी ने कहा- यह जीवन एक प्रश्न है, इसे कैसे हल करें? इसके लिए संकल्प, अभ्यास और एकाग्रता की आवश्यकता है। नया जोश और नव उमंग भरते हुए साध्वी मौलिकयशाजी एवं साध्वी भावितयशाजी 'नए सूर्य की अगवानी में' शब्दचित्र तथा 'जीवन की कहानी सुन्दर हो' सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी। तेरापंथ महिला मंडल, बोरावड़ ने कार्यक्रम का मंगलाचरण किया।

कार्यक्रम का संचालन साध्वी भावितयशाजी ने किया। तेरापंथी सभा मकराना अध्यक्ष सुरेन्द्र जैन, तेरापंथी सभा बोरावड़ अध्यक्ष नेमीचंद गेलड़ा, महिला मंडल अध्यक्षा हर्षा जैन, स्थानकवासी सभा अध्यक्ष ज्ञानचंद नाहटा आदि के साथ श्रावक समाज की सराहनीय उपस्थिति रही।

श्री उत्सव - एक कदम स्वावलंबन की ओर

आर.आर. नगर।

तेरापंथ महिला मंडल आर.आर. नगर द्वारा तेरापंथ भवन में श्री उत्सव का आयोजन किया गया। उत्सव का उद्घाटन उम्मेद, अजय, जय पटावरी परिवार के द्वारा किया गया। मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत से मंगलाचरण का संगान हुआ।

अध्यक्ष सुमन पटावरी ने आगंतुक सभी का स्वागत करते हुए श्रीउत्सव से जुड़े सभी कार्यकर्ताओं की प्रशंसा की। मुख्य अतिथि एफकेसीसीआई के अध्यक्ष एम.जी बालकृष्ण एवं डायरेक्टर पी.ए राजपुरोहित का परिचय रश्मि बोथरा ने दिया।

अतिथि द्वय ने मंडल द्वारा महिलाओं के सशक्तिकरण के इस प्रयास को भविष्य के लिए शुभ सूचक बताया। अभातेममं की परामर्शक लता जैन, कार्यकारिणी सदस्य मधु कटारिया, वीणा बैद, निवर्तमान अध्यक्ष कंचन छाजेड़, सरोज आर बैद, लता बाफना, तेरापंथ सभा ट्रस्ट अध्यक्ष मनोज डागा, सभा अध्यक्ष राकेश छाजेड़, युवक परिषद अध्यक्ष बिकास छाजेड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। अतिथि के रूप में जीतो नॉर्थ विंग की अध्यक्ष लक्ष्मी बाफना, ENT स्पेशलिस्ट डॉक्टर मीरा देवी भी उपस्थित रहे। विविध प्रकार के 50 स्टॉल बहनों द्वारा लगाए गए। बेंगलुरु के अतिरिक्त अन्य शहरों की महिला उद्यमियों ने भी इस प्रदर्शनी में भाग लिया।

श्री उत्सव को आकर्षक एवं व्यवस्थित रूप देने में संयोजिका आशा लोढा एवं सह-संयोजिका श्वेता कोठारी का श्रम एवं सुंदर कार्यशैली मुखरित हो रही थी। स्टॉल बुकिंग में निशा छाजेड़, दीपाली गोलछा, रुचिका पटवारी का सहयोग रहा। आभार ज्ञापन मंत्री पदमा महेर ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 जनवरी- 02 फरवरी, 2025

समाधिमय जीवन का वरदान है प्रेक्षाध्यान

जयपुर।

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के अवसर पर टेगौर नगर में पाँच घण्टे का प्रेक्षा ध्यान शिविर आयोजित किया गया। योग प्रशिक्षक राम मेहर ने शिविरार्थियों को रोचक प्रशिक्षण दिया। शिविर में अच्छी संख्या में भाई बहनों ने भाग लिया।

साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने उद्बोधन में कहा - परम पूज्य गुरूदेवश्री ने इस वर्ष को प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के रूप में घोषित किया है। प्रेक्षाध्यान आचार्य महाप्रज्ञजी का न सिर्फ जैन जगत को बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति को अनमोल उपहार है। प्रेक्षाध्यान एक ऐसी संजीवनी बूटी है, जिसे लेकर व्यक्ति व्याधिमुक्त बन सकता है। प्रेक्षाध्यान एक ऐसा टॉनिक है जिसे लेकर व्यक्ति ऊर्जावान एवं शक्तिसंपन्न बन सकता है। प्रेक्षाध्यान समाधिमय जीवन का वरदान है। साध्वीश्री ने कहा हम नारे तो बहुत लगाते हैं कि 'कैसे बदले जीवन धारा - प्रेक्षाध्यान साधना द्वारा।'

हम सिर्फ नारा ही नहीं लगाए बल्कि ध्यान साधना के द्वारा अपनी लाईफ स्टाइल को भी बदलें। आज की भागमभाग की लाईफ में व्यक्ति तनाव ग्रस्त बन रहा है, कुंठा, निराशा हताशा बढ़ती जा रही है। इन सब बीमारियों का समूल नाश ध्यान के द्वारा ही हो सकता है। आज हम अपने संकल्प को जागृत करें एवं ध्यान को जीवनशैली का अंग बनाएं। भाई राम मेहर ने बेहतरीन प्रशिक्षण देकर ध्यान की उपयोगिता को सिद्ध किया है।

डॉ. साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा हमारा मस्तिष्क इच्छापूर्ति वृक्ष की तरह है। ध्यान के द्वारा हम अपने मस्तिष्क की सक्रियता को और अधिक बढ़ा सकते हैं। साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने कार्यक्रम का संचालन किया। योग प्रशिक्षक राम मेहर ने आसन, प्राणायाम एवं ध्यान का व्यवस्थित प्रशिक्षण दिया। सेठिया परिवार की बहनों ने मंगल संगान किया। सभा उपाध्यक्ष सुरेन्द्र सेठिया, तेयुप जयपुर के पूर्व अध्यक्ष राजेश छाजेड़ ने विचार व्यक्त किए।

कैंसर अवेयरनेस कार्यक्रम का आयोजन

जसोल।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में साध्वी रतिप्रभा जी आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल, जसोल द्वारा कैंसर अवेयरनेस प्रोग्राम का आयोजन किया गया।

साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण किया गया। अध्यक्ष कंचनदेवी ढेलडिया ने सभी स्वागत करते हुए आज के कार्यक्रम के विषय की जानकारी दी।

उपाध्यक्ष जयश्री सालेचा, हेमलता बाघमार और जसोदा सकलेचा ने संवाद की प्रस्तुति द्वारा कैंसर जागरूकता का संदेश दिया।

मुख्य वक्ता डॉ. बजरंग ने कहा कि सारी बीमारियों का जन्म पेट में होता है। इसे स्वस्थ रखने से हम स्वस्थ और अनेक प्रकार के रोगों से दूर रह सकते हैं। जितना हो सके एल्यूमिनियम का प्रयोग अवॉइड करें, अच्छा डाइट लें, आसन प्राणायाम, ध्यान करने से स्वस्थ जीवन जी सकते हैं।

साध्वी रतिप्रभा जी ने कहा कि बीमारी आने पर घबराए नहीं, धैर्य, सकारात्मक सोच रखे, समभाव में, समता में रहे। साध्वी पावनयशा जी ने हस्त मुद्राओं का प्रयोग करवाया और उसके लाभ भी बताए। कार्यक्रम का संचालन उपासिका लीला सालेचा ने किया और आभार ज्ञापन पूर्व मंत्री ममता मेहता ने किया।

सद्संस्कारों से करें विद्यार्थियों का जीवन निर्माण

कांदीवली।

महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउण्डेशन द्वारा संचालित महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल के विद्यार्थी-गण की संगोष्ठी साध्वी प्रोफेसर मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में रखी गई। साध्वीश्री ने कहा- एक महामानव, महायोगी के अभिधान से जुड़ा यह विद्यालय सौभाग्यशाली है। बौद्धिक और शारीरिक विकास के साथ मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य अत्यावश्यक है। ज्ञान के साथ विवेक चेतना जागृत रहे। बाल अवस्था सद्संस्कार प्राप्त करने की है। हर विद्यार्थी का लक्ष्य उन्नत होना चाहिए। बाल जीवन निर्माण में अभिभावक एवं शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जिन संस्कारों में इन्हें ढाला जाएगा, ढल जाएंगे। साध्वीश्री ने कहा की पुस्तकीय ज्ञान के साथ जीवन विज्ञान और प्रेक्षाध्यान के सिद्धान्त और प्रयोग बच्चों के लिए कारगर सिद्ध हो सकतें हैं। उन्होंने उपस्थित विद्यालय परिवार को कायोत्सर्ग, मुद्रा, ध्यान आदि अनेक प्रयोग भी करवाए। साध्वीश्री ने समस्त विद्यार्थियों से डिजिटल डिटॉक्स अपनाने की बात कही। साध्वीश्री की प्रेरणा से उपस्थित विद्यार्थियों एवं शिक्षिकाओं ने डिजिटल डिटॉक्स के नियमों को स्वीकार किया।

इस अवसर पर साध्वी डॉ. चैतन्यप्रभा जी ने अपने वक्तव्य में कहा आत्मानुशासन सफलता का राज है। कार्यक्रम में स्कूल प्रिंसिपल एवं स्कूल की प्रशिक्षिकाओं की उपस्थिति रही। प्रशिक्षकाओं ने साध्वीश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

कैंसर जागरूकता अभियान

राउरकेला। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित कैंसर जागरूकता अभियान के अंतर्गत राउरकेला महिला मंडल ने ज्वाइंट म्युनिसिपल ऑफिसर पल्लवी नायक तथा वाइस म्युनिसिपल ऑफिसर अनीता नायक से मिलकर उनके सहयोग और समर्थन से फूड कोर्ट्स में बैनर लगवाये। इस अभियान की जानकारी देते हुए अध्यक्ष तरुलता जैन ने कहा की कैंसर को रोकना मुश्किल है पर नामुमकिन नहीं। हमारी थोड़ी सी जागरूकता से हम काफी हद तक कैंसर होने की संभावना को कम कर सकते हैं। मंत्री कविता डागा ने खाने में फॉयल पेपर और न्यूज़पेपर के उपयोग से हो रहे नुकसान की जानकारी दी। उपस्थित दुकानदारों और कॉलेज के बच्चों ने न्यूजपेपर और फायल पेपर इस्तेमाल नहीं करने का संकल्प लिया। स्थानीय तेरापंथ भवन में वर्कशॉप में शामिल बहनों और बच्चों को भी जागरूक किया गया।

बोलती किताब

भीतर है अनंत शक्ति का स्रोत

प्रायश्चित्त - प्रायश्चित्त भूल के अनुरूप होता है। इससे साधना का पथ प्रशस्त होता है। इससे अतिचार भीरुता और साधना के प्रति जागरूकता विकसित होती है। आलोचना, निन्दा और गर्हा — ये तीनों प्रायश्चित्त सूत्र हैं। इनके द्वारा प्रमादजनित आचरण का विशोधन किया जाता है।

भीतर है अनंत शक्ति का स्रोत' - इस अभिधा से स्पष्ट है कि शक्ति का स्रोत बाहर से भीतर की ओर नहीं जा रहा है, किन्तु भीतर से बाहर की ओर आ रहा है। हमारे भीतर शक्ति है, प्रकाश है, और भी बहुत कुछ है; पर हमारी इन्द्रियां बहिर्मुखी हैं और मन भी बहिर्मुख हो रहा है। इसीलिए अपनी आन्तरिक शक्ति और प्रकाश से हम अपरिचित हैं। हम सुनी-सुनाई व रटी-रटाई बातों के आधार पर जानते हैं कि हमारे भीतर अनन्त शक्तियां छिपी पड़ी हैं। पर सचाई यह है कि हम नहीं जानते कि हमारे भीतर अनंत शक्तियों का अस्तित्व है।

कल्पना विमुक्त - मन को एक साथ खाली नहीं किया जा सकता। उसे असत् कल्पनाओं से मुक्त करने के लिए सत् कल्पनाओं का आलम्बन लिया जाता है। इन कल्पनाओं का विशद वर्णन प्राचीन साहित्य में मिलता है। कल्पना करें कि हृदय कमल है। उसके चार पत्र हैं, बीच में एक कर्णिका है। चार पत्रों और कर्णिका पर क्रमश: अ सि आ उ सा लिखा हुआ है। प्रत्येक अक्षर ज्योतिर्मय है और वह प्रदक्षिणा करता हुआ घूम रहा है। यह कल्पना पुष्ट होगी तो दूसरी कल्पनाएं अपने-आप विलीन हो जाएंगी।

ध्यान और शून्यता - ध्यान अवस्था शून्य अवस्था है, किन्तु इस तथ्य को अनेकान्त की भाषा में समझना चाहिए। ध्यान में जितनी बाह्य विकल्पों की शून्यता होती है, उतनी ही आत्मिक जागरूकता बढ़ जाती है। इसीलिए आत्मा शून्याशून्य स्वभाव है। प्रश्न उठता है कि यदि मन को शून्य करना ही ध्यान है तो फिर नींद भी ध्यान है। नींद में आन्तरिक जागरूकता नहीं रहती। वह स्वयं एक वृत्ति है, इसलिए वह ध्यान नहीं है। विचार-शून्यता भी ध्यान नहीं है। इसे ध्यान माना जाये तो मूर्च्छा को भी ध्यान मानना होगा और वह ध्यान नहीं है। वहां चेतना की विस्मृति है। ध्यान वह होता है जहां चेतना की जागृति हो।

पुस्तक ऑनलाइन पढ़ने के लिए
डाउनलोड करें सम्बोधि इ-लाइब्रेरी ऐप्प -
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती

SCAN ME
Sambodhi E-Library

प्रेक्षाध्यान कार्यक्रम का आयोजन

शाहीबाग अहमदाबाद।

प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देशन में प्रेक्षावाहिनी शाहीबाग अहमदाबाद व तेरापंथ सेवा समाज के संयुक्त तत्वावधान में तेरापंथ भवन के ध्यान कक्ष में प्रेक्षाध्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुनि धर्मरुचिजी, मुनि डॉ. मदनकुमारजी के मंगलपाठ से कार्यक्रम की मंगल शुरुआत हुई। अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि मननकुमार जी ने कहा कि जीवन विज्ञान जीवन जीने की सही कला सिखाता है।

इससे सकारात्मक ऊर्जा का विकास होता है। आवश्यकता है कि हम पूरे मनोयोग के साथ स्वयं इससे जुड़ें व दूसरों को जोड़ने का प्रयास करें। प्रेक्षा प्रशिक्षक जवेरीलाल संकलेचा ने कहा कि प्रेक्षाध्यान प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञजी का मानव जाति के लिए महान अवदान है जो आधि, व्याधि और उपाधि से मुक्ति का सशक्त उपाय है। आवश्यकता इस बात की है प्रेक्षाध्यान हमारे जीवन की प्रयोगशाला बने। जवेरीलाल संकलेचा ने प्रेक्षाध्यान का सुंदर प्रयोग करवाया। त्रिपदी वंदना व प्रेक्षा गीत का संगान विमल बाफना ने किया। तेरापंथ सेवा समाज के प्रधान ट्रस्टी सज्जनराज सिंघवी ने स्वागत किया। सोहनराज भरसारिया ने दीर्घ श्वास, मीनाक्षी घीया ने मंगल भावना एवं आभार सुरेश मुणोत ने किया।

आत्मा कल्याण के लिए हो अहिंसा का आचरण : आचार्यश्री महाश्रमण

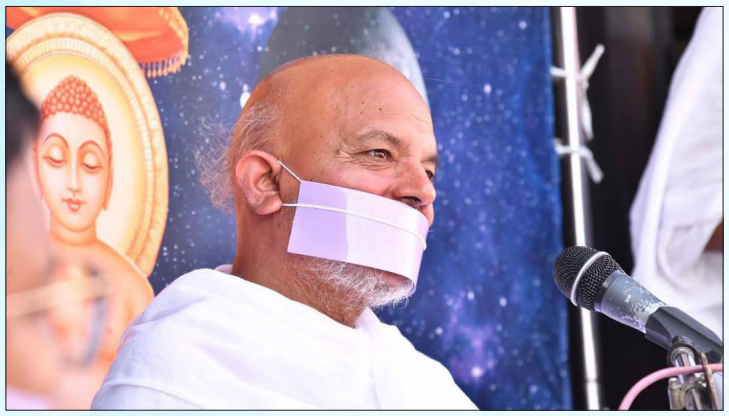

अर्जुननगर।
16 जनवरी, 2025

जिन शासन के उज्ज्वल नक्षत्र आचार्यश्री महाश्रमणजी लगभग 12 किमी का विहार कर सौराष्ट्र के अर्जुननगर स्थित धांग्रा परिवार के निवास स्थान में पधारे।आध्यात्मिक प्रेरणा प्रदान कराते हुए पूज्यवर ने फरमाया कि अहिंसा धर्म होता है। किसी भी जीव को अपनी ओर से कष्ट न पहुंचाना और न ही किसी प्रकार की हिंसा का प्रयास करना। यह भावना न केवल उत्तम है बल्कि आत्म-कल्याण के लिए अनिवार्य भी है।

आदमी के पास ज्ञान है, और उसे इस ज्ञान का उपयोग अहिंसा के पथ पर चलने के लिए करना चाहिए। ज्ञान का सार आचरण में निहित है। अहिंसा का आचरण करना, इसके सिद्धांत को समझना और इसे अपने जीवन में आत्मसात करना, व्यक्ति के आत्म-उत्थान में सहायक होता है।

आचार्यश्री ने बताया कि व्यक्ति अक्सर लोभ या आक्रोश के वशीभूत होकर हिंसा करता है। अतः लोभ और क्रोध पर नियंत्रण आवश्यक है। गलत तरीकों से धन अर्जित करने या धन के प्रति अत्यधिक मोह से बचना चाहिए। पूज्यवर ने स्पष्ट किया कि यहाँ से धन साथ नहीं जाता, केवल धर्म और पुण्य-पाप के कर्म ही व्यक्ति के साथ जाते हैं।

आचार्यश्री ने बुजुर्गों को साधु-संतों की संगति में समय बिताने और आत्मा के कल्याण के लिए प्रयास करने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि आत्मा और शरीर भिन्न हैं, और आत्मा अपने कर्मों के अनुसार अलग-अलग गतियों में विचरण करती रहती है। अतः व्यक्ति को अपने कर्मों का विवेकपूर्ण चयन करना चाहिए।

पूज्यवर ने कहा - बिना कारण किसी भी प्राणी को कष्ट न दें। गुस्से में किसी को गालियां देना या नुकसान पहुंचाना हिंसा के समान है। गुस्सा भी एक प्रकार का नशा है।

उन्होंने शांति और संतोष के साथ जीवन जीने की प्रेरणा दी और कहा कि पूर्वकृत पुण्य के परिणामस्वरूप हमें सुख-सुविधा मिलती है, लेकिन हमें भविष्य के लिए भी कुछ करें ताकि आत्मा निर्मल बनी रहे।

अर्जुननगर की ओर से दिनेशभाई धांग्रा और नेहा धांग्रा ने आचार्यश्री का स्वागत करते हुए अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अहिंसा के सतपथ पर चलने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

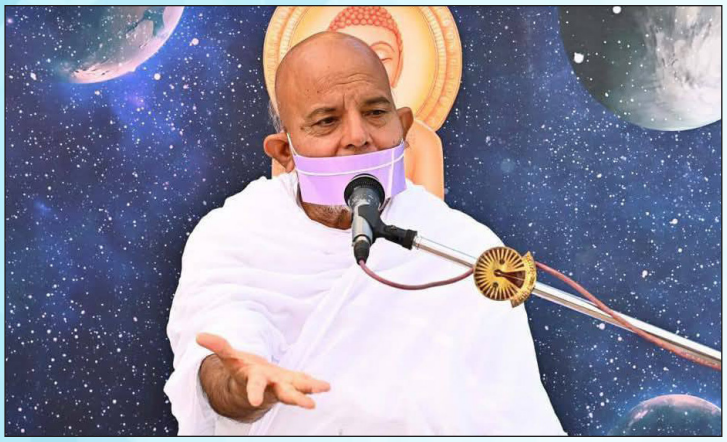

वीरपर।
13 जनवरी, 2025

जिन शासन के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमणजी टंकारा से लगभग दस किलोमीटर का विहार कर वीरपर स्थित श्री चंपापुरी तीर्थ में पधारे। पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए युवा मनीषी ने फरमाया कि नौ तत्वों में पांचवा तत्व आश्रव है। पुण्य अथवा पाप के रूप में आत्मा के जितने भी कर्म लगते हैं, उसमें आश्रव की उत्तरदायित्वता संपूर्णतया होती है। पुण्य और पाप दोनों रूपों में कर्मों का ग्रहण होता है। जो कर्म बंधते हैं, उनका यथा विधि फल भी प्राणी को मिलता है।

पुण्य का फल मिलता है तो पाप का फल भी मिलता है। पिछले किस कर्म का फल कब मिलेगा, यह कहा नहीं जा सकता। कर्मवाद का सिद्धांत है- जैसी करनी, वैसी भरनी। आदमी को पाप कर्म से, अशुभ कार्य से ज्यादा से ज्यादा बचना चाहिए और आत्म शुद्धि के लिए अच्छी प्रवृत्ति करनी चाहिए। कर्म किसी को छोड़ता नहीं है। किए हुए कर्मों को वेदने अथवा तपस्या के माध्यम से निर्जरा करने से कर्म कटते हैं। पुण्य कर्म का संचय होता है और उसका प्रभाव होता है तो एक सामान्य परिवार का व्यक्ति देश का राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री भी बन सकता है।

हम कर्मों पर ध्यान दें, हमारे निंदनीय पाप कर्म न बंधें। हम अहिंसा के सतपथ पर चलने का, धर्म के मार्ग पर चलने का प्रयास करें। आज यहां हम भगवान वासुपूज्य के स्थान पर आए हैं। पूज्य प्रवर ने जयाचार्य द्वारा रचित 'वासुपूज्य स्तवन' का आंशिक संगान करवाया।

पूज्यवर के स्वागत में चंपापुर तीर्थ की ट्रस्टी दीपाबेन शाह ने भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

सम्पादकीय

पहचान, ढाल और रक्षक है मर्यादा और अनुशासन

भगवान महावीर ने अपने शिष्यों से कहा – 'भिक्षुओं! तुम परिव्रजन करो तथा अभिजात और निम्न वर्ग को एक ही धर्म की शिक्षा दो।'

भगवान महावीर के शिष्य–शिष्याएं आज भी परिव्रजन कर रहें हैं और सुप्त मानव जाति को सही मार्ग दिखाने का प्रयास कर रहे हैं। भगवान के समय भी चारित्रात्माओं के लिए कुछ व्यवस्थाएं थी। कालान्तर में उन व्यवस्थाओं में परिवर्तन हुआ और परिवर्तन होते–होते इतने परिवर्तन हो गए कि निर्ग्रन्थ पथ पर चलने वाले पथिक मूल पथ से ही भटक गए। ऐसे समय में राजनगर के श्रावकों की घटना ने संत भीखणजी को यथार्थ को जानने की प्रेरणा दी और जन्म हुआ तेरापंथ का।

इसके पूर्वार्ध और उत्तरार्ध का इतिहास किसी परिचय की अपेक्षा नहीं रखता। सब जानते हैं कि मर्यादा और अनुशासन इस संघ की नींव, पहचान, ढाल और रक्षक है। आचार्य श्री भिक्षु द्वारा लिखित एवं उत्तरवर्ती आचार्यों द्वारा निर्णीत मर्यादाएं किसी पर थोपी नहीं जाती, वरन एक–एक की आत्म साक्षी से स्वीकृत होती हैं। चारित्रात्माएं लेखपत्र का वाचन करते हैं और उनके सम्यक निर्वहन का प्रयास भी करते हैं। आचार्य श्री तुलसी ने श्रावक समाज के लिए भी मर्यादा पत्र सदृश 'श्रावक निष्ठा पत्र' का सृजन किया। हर श्रावक–श्राविका को श्रावक निष्ठा पत्र और सम्यक्त्व दीक्षा के नियम न केवल कंठस्थ हों अपितु उनका आचरण भी उसी अनुरूप रहे। प्रश्न है कि क्या आप और मैं इनका सम्यक पालन कर पाते हैं? आचार्य की आज्ञा और निर्देश ही नहीं, उनके इशारे को समझ कर भी उसका सम्यक आचरण हमारे इस भव को सफल बना कर भव परंपरा से मुक्ति में भी सहायक हो सकता है। आवश्यकता है तो केवल सर्वात्मना समर्पण की। सर्वात्मना समर्पण की भावना मुझ में, आप में और धर्म संघ के हर सदस्य में वृद्धिंगत होती रहे।

मर्यादा महोत्सव ऐसा अवसर है, जब पूज्य आचार्य प्रवर मर्यादाओं की स्मारणा कराते हैं और धर्मसंघ को नवीन निर्देश देते हैं। चतुर्विध धर्मसंघ इन निर्देशों को समर्पित भाव से अपनाता है इसीलिए धर्म संघ की शक्ति और प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है। चारित्रात्माओं के विहार–चतुर्मास आदि की घोषणा भी इस अवसर पर होती है। शेष काल का समय वैसे भी विहार का होता है, कई स्थानों पर चारित्रात्माओं की रास्ते की सेवा में विभिन्न संस्थाओं का योगदान रहता है। प्रायः सभा और युवक परिषद् की भूमिका प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देती है। समाज की अन्य संस्थाएं भी इसे अपनी एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी समझे एवं अपने तन और मन का कुछ योगदान इस सेवा में अवश्य दें। स्थानीय सभाएं भी आगे आकर बैनर में उल्लेखित होने वाली सहयोगी संस्थाओं को दायित्व के साथ जोड़ें और उन्हें भी कर्म निर्जरा का अवसर प्रदान करें। सबसे उत्तम स्थिति तो यह हो कि श्रावक समाज स्वयं को इन संस्थाओं का या धर्म संघ का अंग मानकर कुछ दिनों की पारिवारिक सेवा का प्रयास करे। कुछ घंटों की रास्ते की सेवा एक श्रावक को संत दर्शन, वंदना, रास्ते में मौन साधना, तिविहार या चौविहार त्याग, यथा संविभाग व्रत, प्रवचन, संवर या सामायिक, मंगल पाठ और आशीर्वाद, आध्यात्मिक ऊर्जा आदि अनेकों लाभ एक साथ मिल सकते हैं, बस स्व–विवेक को जागृत करने की अपेक्षा है।

खैर, पूज्य श्री अनेकों की खाली झोली को चातुर्मासों से भरने वाले हैं। अपने पात्रों को सीधा और खाली रखेंगे तो कुछ प्राप्त कर पाएंगे, अन्यथा पात्र होकर भी अर्थ नहीं निकल पाएगा। चारित्रात्माओं को शय्यातर, कपड़े, आहार, औषध या अन्य उपयोगी दान की भावना अवश्य भाएं, और यही संस्कार अपने बच्चों में भी संक्रांत करें। शुद्ध हृदय से भावना भाने मात्र से भी हमारा कल्याण निश्चित है, और आत्म–कल्याण ही तो हमारा लक्ष्य है।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
27 जनवरी- 02 फरवरी, 2025

मोक्ष का उपाय - साधु की पर्युपासना : आचार्य श्री महाश्रमण

भरतनगर, जूना सादुलका।
15 जनवरी, 2025

सौराष्ट्र से कच्छ की ओर गतिमान परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी भरतनगर के पटेल समाजवाड़ी भवन में पधारे। मंगल देशना प्रदान कराते हुए पूज्यवर ने फरमाया कि मोक्ष पहुंचने की यात्रा के सन्दर्भ में एक मार्ग बताया गया है - साधुओं की पर्युपासना करना।

पर्युपासना करने से पहला लाभ बताया गया कि तुम श्रमणों के पास बैठोगे तो कुछ सुनने को मिल जाये। श्रमणोपासक श्रावक होता है। पास में बैठने से कुछ ज्ञान की बात सुनने का लाभ मिल सकता है। वर्तमान में तो साधुओं की वाणी सुनने के अनेक संसाधन उपलब्ध है। सोशियल मीडिया से दुनिया भर की बातें सुनने-जानने को मिल सकती है पर वाणी सुनने के लिए कुछ प्रयास तो करना होगा।

साक्षात सुनने का लाभ तो विशेष होता है। आंख और कान ज्ञान प्राप्ति के सक्षम माध्यम हैं। देखने और सुनने से बात स्पष्ट होती है। सुनने से ज्ञान हो सकता है। जैन धर्म से संबंधित अनेक ग्रन्थों के भंडार है जिनमें ज्ञान की बातें जानी जा सकती है। कई बार पढ़ने से पर्याप्त ज्ञान मिलता है, कोई पढ़ाने वाला भी चाहिए। कान से सुनकर ज्ञान ग्रहण करने का भी महत्व है।

ज्ञान से विज्ञान होता है। हेय, ज्ञेय, उपादेय का पृथक्करण किया जा सकता है कि जानने लायक क्या है, छोड़ने लायक क्या है। छोड़ने का त्याग करेंगे तो संयम हो जाएगा। संयम से अनाश्रव हो जाएगा, कर्मों का बन्ध नहीं होगा। फिर ज्ञेय होगा तो व्यवधान-निर्जरा होगी, कर्म झड़ेंगे। फिर आगे बढ़ते-बढ़ते अक्रिय होकर, चौदहवें गुणस्थान में पहुंच कर निर्वाण को प्राप्त हो सकते हैं। यह सिद्धि का मार्ग है। धार्मिक ज्ञान के साधु स्वयं अध्येता है। गृहस्थ भी अच्छे ज्ञानी हो सकते हैं। साधुओं की सत्संगत बड़ी सुखदायी बन सकती है। साधु का गांव में समागम होना अच्छी बात है। संत समागम व भगवान की वाणी सुनना बढ़िया बात है। आदमी को सज्जनों की संगत करनी चाहिए। कहा गया है - सत्संगत से सुख मिलता है। आदमी त्यागी संतों की संगत करे।

कितनी योनियों में भ्रमण के बाद मानव जीवन मिलता है। मनुष्य जन्म से आदमी आत्मा से परमात्मा बन सकता है, संसार से मोक्ष में जा सकता है। मानव जीवन जो हमें मिला हुआ है, उसका अच्छा लाभ उठाएं, पाप कर्म करने से बचें। जीवन में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति रहे। ध्यान, जप, स्वाध्याय में समय लगाएं ताकि आत्मा को उज्ज्वल बना सकें।

आज पटेल समाज के भवन में आए हैं। पटेल समाज में भी अच्छे संस्कार रहे।

मोरबी के डिप्टी कलेक्टर सुशीलकुमार परमार, सरपंच विठ्ठल भाई पटेल ने पूज्यवर के स्वागत में अपनी भावना अभिव्यक्त की। मोरबी तालुका पंचायत प्रमुख अशोकभाई पटेल, मोरबी भाजपा के जिला महामंत्री ज्योतिसिंह जडेजा आदि ने पूज्य प्रवर के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।